शुभाशुभ ज्ञानम्

शुभाशुभज्ञान आपको अपने मित्र एवं शत्रु वर्ग का बोध कराता है। मूलांक, भाग्यांक एवं मित्रांको से मित्रता एवं साझेदारी करने से लाभ तथा सहयोग की प्राप्ति होती है। साथ ही शुभ दिन एवं वर्ष उन्नति कारक तथा शुभ ग्रहों की दशाएं लाभदायक होती हैं। इसी प्रकार मित्रलग्न लाभदायक एवं मित्र राशि से घनिष्ठता होती है।

शुभरत्न धातु एवं रंग धारण करने से शारीरिक एवं मानसिक स्वस्थता बनी रहती है तथा भाग्य रत्न धारण करने से सौभाग्य में वृद्धि होती है। शुभ समय में कोई भी कार्य प्रारम्भ करने से उसमें इच्छित सफलता की प्राप्ति होती ह। साथ ही इष्टदेव का ध्यान एवं जप से मानसिक शान्ति तथा सफलता मिलती है। शुभ पदार्थ अन्न, द्रव्य आदि का दान या व्यापार शुभ दिशा में करने से वांछित लाभ प्राप्त होता है। इस प्रकार शुभाशुभज्ञान का दैनिक जीवन में प्रयोग शुभफलदायक सिद्ध हो सकता है।

मूलांक	..... :	3
भाग्यांक	..... :	9
मित्र अंक	..... :	3, 5, 7, 9
शत्रु अंक	..... :	1, 4, 8
शुभ वर्ष	..... :	21, 30, 39, 48, 57
शुभ दिन	..... :	शनिवार, बुधवार, रविवार
शुभ ग्रह	..... :	शनि, बुध, सूर्य
मित्र राशि	..... :	वृश्चिक, मेष
मित्र लग्न	..... :	सिंह, मकर, धनु
शुभ रत्न	..... :	हीरा
शुभ उपरत्न	..... :	तंकु हीरा, कसला, सिम्मा
भाग्य रत्न	..... :	नीलम
अनुकूल देवता	..... :	सूर्य
शुभ धातु	..... :	रजत
शुभ रंग	..... :	श्वेत
शुभ दिशा	..... :	दक्षिणपूर्व
शुभ समय	..... :	सूर्योदय
दान पदार्थ	..... :	मिसरी, दधि, श्वेतचन्दन
दान अन्न	..... :	चावल
दान द्रव्य	..... :	दूध

उपाय एवं रत्न विचार

किसी भी कुंडली में दशानुसार ग्रह का उपाय एवं रत्न धारण करने से शुभत्व में वृद्धि होती है। वैज्ञानिक रूप से विशिष्ट ग्रह का मंत्रोच्चारण करने से उस ग्रह की रश्मियों की मानव शरीर के चारों ओर सुरक्षा श्रृंखला बन जाती है एवं रत्न रश्मियों को सौंपकर मानव शरीर में प्रवाहित कर शुभत्व में वृद्धि करता है। अतः रत्न का बेदाग होना एवं शरीर से स्पर्श करना अत्यंत आवश्यक माना गया है। सामान्यतया उपाय ग्रह दशा के फल की वृद्धि के लिए महादशा स्वामी का किया जाता है। उपाय में मंत्रोच्चारण, दान एवं व्रत ही प्रमुख हैं। रत्न निर्बल परंतु लग्नेश, भाग्येश या योगकारक ग्रहों का पहना जाता है। आपको कब कौन सा उपाय या रत्न धारण करना चाहिए नीचे तालिका में उसके कार्यसिद्धि क्षेत्र सहित दिया गया है। महादशाओं में रत्नों के तीन-तीन विकल्प दिए गए हैं। आपको कोई भी विकल्प उसकी कार्यसिद्धि क्षेत्र एवं क्षमता देखकर अपनी आवश्यकतानुसार पहन सकते हैं तथा अतिरिक्त उपाय भी अपनी क्षमतानुसार कर सकते हैं।

महादशानुसार उपाय एवं रत्न विचार

जीवन रत्न	**: हीरा**	**स्वास्थ्य, शत्रु व रोग मुक्ति,**
भाग्य रत्न	**: नीलम**	**सन्तति सुख, भाग्योदय, व्यावसायिक उन्नति**
कारक रत्न	**: पन्ना**	**स्वास्थ्य, धन, सन्तति सुख**
	माणिक्य	कम खर्च, सुख, सन्तति सुख

महादशा	रत्न	क्षमता	मंत्र-जप/व्रत-दान/लाभ
केतु	माणिक्य	69%	ऊँ स्रां स्रीं स्रौं सः केतवे नमः (17000)
12/05/1981	नीलम	66%	मंगलवार-तिल, सप्तधान्य, नारियल, शस्त्र, तेल
10/10/1982	पन्ना	64%	भाग्योदय, सुख, सन्तति सुख
शुक्र	हीरा	77%	ऊँ द्रां द्रीं द्रौं सः शुक्राय नमः (16000)
10/10/1982	माणिक्य	77%	शुक्रवार-चावल, मिसरी, दधि, श्वेतचन्दन, दूध
10/10/2002	पन्ना	76%	स्वास्थ्य, शत्रु व रोग मुक्ति, सन्तति सुख
सूर्य	माणिक्य	94%	ऊँ ह्रां ह्रीं ह्रौं सः सूर्याय नमः (7000)
10/10/2002	नीलम	74%	रविवार-गेहुँ, मूंगा, केसर, रक्तचन्दन, घी
10/10/2008	पन्ना	69%	कम खर्च, सुख, सन्तति सुख
चन्द्र	माणिक्य	76%	ऊँ श्रां श्रीं श्रों सः चन्द्रमसे नमः (11000)
10/10/2008	नीलम	74%	सोमवार-चावल, शंख, कपूर, श्वेतचन्दन, दही
10/10/2018	पन्ना	67%	सुख, पराक्रम, सन्तति सुख
मंगल	माणिक्य	84%	ऊँ क्रां क्रीं क्रों सः भौमाय नमः (10000)
10/10/2018	नीलम	77%	मंगलवार-मसूर (मल्का), केसर, कस्तूरी, रक्तचन्दन, घी
10/10/2025	पन्ना	66%	कम खर्च, दम्पति, सन्तति सुख
राहु	नीलम	74%	ऊँ भ्रां भ्रीं भ्रौं सः राहवे नमः (18000)
10/10/2025	माणिक्य	69%	शनिवार-तिल, सरसों, खड़ग, कम्बल, तेल
10/10/2043	पन्ना	66%	पराक्रम, दम्पति, सन्तति सुख
गुरु	माणिक्य	84%	ऊँ ग्रां ग्रीं ग्रों सः वृहस्पतये नमः (19000)
10/10/2043	नीलम	77%	गुरुवार-दाल चना, हल्दी, पुस्तक, पीत पुष्प, घी
10/10/2059	पन्ना	60%	सन्तति सुख, दुर्घटना से बचाव, धनार्जन

योग कारक

किसी भी जन्मकुंडली में ग्रह, अपने स्वामित्व तथा स्थिति के अनुसार, सकारात्मक या नकारात्मक फल देते हैं। ये ग्रह विभिन्न दशा काल में भिन्न-भिन्न प्रकार से आचरण करते हैं, जो दशा स्वामी की स्थिति तथा उससे ग्रह के संबंध पर आधारित है। सुविधा के लिए हमने ग्रह के शुभ तत्वों की संगणना प्रतिशत में की है। 50 से अधिक अंक प्राप्त करने वाले ग्रहों को लाभकारक तथा उससे नीचे हानिकारक समझना चाहिए। इस सूचना को आधार बनाकर आप अपनी जन्मकुंडली में दशा के प्रभावों का अध्ययन स्वयं ही कर सकते हैं। इसी तरह इन आंकड़ों द्वारा गोचर के प्रभाव का भी अध्ययन किया जा सकता है।

योग कारक एवं मारक

वृष लग्न के लिए : **योगकारक – शुक्र, शनि, सूर्य**
मारक – चन्द्र, मंगल, गुरु

जन्मकुंडली के लिए : **योगकारक – बुध, सूर्य, शनि**
मारक – राहु, गुरु, चन्द्र

जन्मकुंडली में ग्रह बल

सूर्य	69%	कम खर्च, सुख
चन्द्र	55%	सुख, पराक्रम
मंगल	62%	कम खर्च, दम्पति,
बुध	70%	स्वास्थ्य, धन, सन्तति सुख
गुरु	50%	सन्तति सुख, दुर्घटना से बचाव, धनार्जन
शुक्र	66%	स्वास्थ्य, शत्रु व रोग मुक्ति,
शनि	68%	सन्तति सुख, भाग्योदय, व्यावसायिक उन्नति
राहु	27%	पराक्रम, सुख
केतु	56%	भाग्योदय, सन्तति सुख

दशा काल में ग्रह बल

दशा	समाप्ति	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
केतु	10/10/1982	53	34	75	70	60	80	57	20	90
शुक्र	10/10/2002	41	46	50	98	60	95	82	45	75
सूर्य	10/10/2008	97	75	94	54	56	39	40	32	48
चन्द्र	10/10/2018	82	90	66	80	44	65	53	20	34
मंगल	10/10/2025	97	75	94	41	56	52	53	32	73
राहु	10/10/2043	54	34	51	54	44	64	65	76	34
गुरु	10/10/2059	66	59	62	58	88	55	84	32	63
शनि	10/10/2078	41	34	37	83	75	80	97	45	50
बुध	10/10/2095	66	46	50	98	60	95	69	32	63

नवग्रह रत्न धारण विधि

रत्न का पूर्ण शुभ फल पाने के लिए इसे शुक्ल पक्ष में निर्दिष्ट वार एवं समय में ही धारण करना चाहिए। निर्दिष्ट नक्षत्र में धारण करने से रत्न और भी प्रभावशाली हो जाता है। इसे निम्नलिखित तालिका में दिये गये भार या उससे अधिक भार का लेकर जो किवाया हो एवं पौना न हो जैसे 4-1/4 रत्ती आदि, उसे निर्दिष्ट धातु में इस प्रकार जड़वाएं कि रत्न नीचे से अंगुली को स्पर्श करे।

धारण करते समय अपने इष्ट देव का श्रद्धापूर्वक ध्यान करना चाहिए। तत्पश्चात अंगूठी को कच्चे दूध एवं गंगाजल में धोकर शुद्ध करना चाहिए एवं धूप दीप जलाकर संबंधित ग्रह के मंत्र का कम से कम एक माला जप करना चाहिए। फिर अंगूठी को धूप देकर निर्दिष्ट अंगुली में दाएं हाथ में धारण करना चाहिए। अंगूठी धारण के पश्चात यथाशक्ति संबंधित ग्रह के पदार्थों का दान करना चाहिए। पेंडन्ट धारण करें तो भी शरीर को स्पर्श करे।

यदि आप अन्य कोई रत्न पहले से पहने हुए हैं तो यह ध्यान रखें कि परस्पर विरोधी रत्न एकसाथ न पहनें। यह आप निम्नलिखित तालिका से देख सकते हैं। उपरोक्त विधि से रत्न को पहनने से रत्न के शुभ फल प्रचुर मात्रा में शीघ्र मिलते हैं।

रत्न	ग्रह	भार	धातु	अंगुली	वार	समय	नक्षत्र
माणिक्य	सूर्य	4 रत्ती	सोना	अनामिका	रवि	प्रातः	कृतिका, उ फा, उ षा
मोती	चन्द्र	4 रत्ती	चांदी	कनिष्ठिका	सोम	प्रातः	रोहिणी, हस्त, श्रवण
मूंगा	मंगल	6 रत्ती	चांदी	अनामिका	मंगल	प्रातः	मृगशिरा, चित्रा, धनिष्ठा
पन्ना	बुध	4 रत्ती	सोना	कनिष्ठिका	बुध	प्रातः	आश्लेषा, ज्येष्ठा, रेवती
पुखराज	गुरु	4 रत्ती	सोना	तर्जनी	गुरु	प्रातः	पुनर्वसु, विशाखा, पू भाद्र
हीरा	शुक्र	1/4 रत्ती	प्लैटिनम	कनिष्ठिका	शुक्र	प्रातः	भरणी, पू फा, पू षा
नीलम	शनि	4 रत्ती	पंचधातु	मध्य	शनि	संध्या	पुष्य, अनुराधा, उ भाद्र
गोमेद	राहु	5 रत्ती	अष्टधातु	मध्य	शनि	सूर्यास्त	आर्द्रा, स्वाति, शतभिषा
लहसुनिया	केतु	6 रत्ती	चांदी	अनामिका	गुरु	सूर्यास्त	अश्विनी, मघा, मूल

रत्न	मंत्र	साथ में निषेध रत्न	दान पदार्थ
माणिक्य	ऊँ घृणि सूर्याय नमः	हीरा, नीलम, गोमेद	गेहूँ, गुड़, चंदन, लाल वस्त्र
मोती	ऊँ सों सोमाय नमः	गोमेद	चावल, चीनी, चांदी, श्वेत वस्त्र
मूंगा	ऊँ अं अंगारकाय नमः	हीरा, गोमेद, नीलम	गेहूँ, गुड़, तांबा, लाल वस्त्र
पन्ना	ऊँ बुं बुधाय नमः	----	मूंग, कस्तूरी, कांसा, हरित वस्त्र
पुखराज	ऊँ वृं वृहस्पतये नमः	हीरा, गोमेद	चने की दाल, हल्दी, पीला वस्त्र
हीरा	ऊँ शुं शुक्राय नमः	माणिक्य, मूंगा, पुखराज	चावल, चांदी, घी, श्वेत वस्त्र
नीलम	ऊँ शं शनैश्चराय नमः	माणिक्य, मूंगा, पुखराज	उड़द, काले तिल, तेल, काले वस्त्र
गोमेद	ऊँ रां राहवे नमः	माणिक्य, मोती, मूंगा	तिल, तेल, कंबल नीले वस्त्र
लहसुनिया	ऊँ कें केतवे नमः	----	सप्तधान्य, नारियल, धूम्र वस्त्र

साढ़ेसाती विचार

चंद्रमा से जन्म कुंडली में जब गोचरवश शनि की स्थिति द्वादश, प्रथम एवं द्वितीय स्थान में होती है तो साढ़ेसाती कहलाती है । शनि की चंद्रमा से चतुर्थ एवं अष्टम भाव में स्थिति होने पर ढैया शारीरिक, मानसिक या आर्थिक कष्ट देता है । लेकिन कई बार यह आश्चर्यजनक उन्नति भी प्रदान करती है । साढ़ेसाती का प्रभाव सात वर्ष एवं ढैया का प्रभाव ढाई वर्ष रहता है ।

सामान्यतया साढ़ेसाती मनुष्य के जीवन में तीन बार आती है । प्रथम बचपन में द्वितीय युवावस्था में तथा तृतीय वृद्धावस्था में आती है । प्रथम साढ़ेसाती का प्रभाव शिक्षा एवं माता-पिता पर पड़ता है । द्वितीय साढ़ेसाती का प्रभाव कार्यक्षेत्र, आर्थिक स्थिति एवं परिवार पर पड़ता है परंतु तृतीय साढ़ेसाती स्वास्थ्य पर अधिक प्रभाव करती है ।

निम्नलिखित तालिका में साढ़ेसाती का समय तथा प्रत्येक ढैया का शुभाशुभ फल इंगित किया गया है ।

शनि का ढैया काल

प्रथम चक्र :-			
साढ़े साती की तृतीय ढैया:	12/05/81 - 06/10/82	----------	----------
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया:	17/09/85 - 17/12/87	----------	----------
अष्टम स्थानस्थ ढैया:	16/02/96 - 17/04/98	----------	----------
साढ़े साती की प्रथम ढैया:	06/09/04 - 13/01/05	26/05/05 - 01/11/06	10/01/07 - 16/07/07
साढ़े साती की द्वितीय ढैया:	01/11/06 - 10/01/07	16/07/07 - 10/09/09	----------
द्वितीय चक्र :-			
साढ़े साती की तृतीय ढैया:	10/09/09 - 15/11/11	16/05/12 - 04/08/12	----------
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया:	02/11/14 - 26/01/17	21/06/17 - 26/10/17	----------
अष्टम स्थानस्थ ढैया:	29/03/25 - 03/06/27	20/10/27 - 23/02/28	----------
साढ़े साती की प्रथम ढैया:	13/07/34 - 27/08/36	----------	----------
साढ़े साती की द्वितीय ढैया:	27/08/36 - 22/10/38	05/04/39 - 13/07/39	----------
तृतीय चक्र :-			
साढ़े साती की तृतीय ढैया:	22/10/38 - 05/04/39	13/07/39 - 28/01/41	06/02/41 - 26/09/41
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया:	11/12/43 - 23/06/44	30/08/44 - 08/12/46	----------
अष्टम स्थानस्थ ढैया:	14/05/54 - 02/09/54	05/02/55 - 07/04/57	----------
साढ़े साती की प्रथम ढैया:	24/08/63 - 06/02/64	09/05/64 - 13/10/65	03/02/66 - 03/07/66
साढ़े साती की द्वितीय ढैया:	13/10/65 - 03/02/66	03/07/66 - 30/08/68	----------

शनि का ढैया फल

ढैया के प्रकार	फल	क्षेत्र
साढ़े साती की तृतीय ढैया:	शुभ	सन्तति
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया:	सम	दाम्पतय कलह
अष्टम स्थानस्थ ढैया:	शुभ	धनार्जन
साढ़े साती की प्रथम ढैया:	सम	पराक्रम हानि
साढ़े साती की द्वितीय ढैया:	अशुभ	सुख हानि

साढ़ेसाती के उपाय

शनि की साढ़ेसाती के अशुभ प्रभावों को कम करने के लिये दान, पूजन, व्रत, मंत्र आदि उपाय किये जा सकते हैं। इसके लिये शनिवार को काला कंबल, उड़द की दाल, काले तिल, चर्म-पादुका, काला कपडा, मोटा अनाज, तिल तथा लोहे का दान करना चाहिये। शनिदेव की पूजा एवं शनिवार का व्रत रखना चाहिये। उपवास के दिन उडद की दाल से बनी वस्तु, चने, बेसन, काले तिल, काला नमक तथा फलों का ही सेवन करना चाहिये। साथ ही स्वयं या किसी योग्य पंडित के द्वारा शनि के निम्न मंत्र के 19000 जप संपन्न करवाने चाहिये।

ऊँ प्रां प्रीं प्रौं सः शनैश्चराय नमः।।

शनि की साढ़ेसाती में शारीरिक, मानसिक, पारिवारिक शांति एवं समृध्दि, आर्थिक सुदृढ़ता तथा कार्यक्षेत्र में उन्नति के लिये निम्नलिखित महामृत्युंजय मंत्र के 125000 जप स्वयं या किसी योग्य पंडित के द्वारा करवाने चाहिये।

ऊँ त्र्यम्बकम् यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम।
उर्वारूकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय माऽमृतात्।।

वैकल्पिक रूप से निम्नलिखित मंत्र के प्रतिदिन 108 जप किये जा सकते हैं।

ऊँ हों जूं सः ऊँ भूर्भुव स्वः ऊँ।।

शनि की साढ़ेसाती के शुभत्व को बढ़ाने के लिये शनिवार के दिन आप ५ १/४ रत्ती का नीलम रत्न पंचधातु में (सोना, चांदी, तांबा, लोखंड, जस्ता) या घोड़े की नाल या नाव की कील से निर्मित लोहे की अंगूठी धारण करें । लोहे की अंगूठी आप दाएं हाथ की मध्यमा अंगुली में धारण करें।

अंगूठी शुक्ल पक्ष की शनिवार की सायं सूर्यास्त के समय धारण करें। पुष्य, अनुराधा या उत्तरा भाद्रपद नक्षत्र अति शुभ हैं। उस दिन शनिवार का उपवास भी करना चाहिए। अंगूठी धारण करने से पूर्व इसे शुद्ध दूध एवं गंगाजल में स्नान कराना चाहिए तथा धूप आदि जलाकर शनि का पूजन करना चाहिए एवं निम्न मंत्र की एक माला या 108 बार जप करना चाहिए। नीलम मध्यमा उंगली में या गले में पेन्डन्ट बनाकर धारण करें ।

ऊँ शं शनैश्चराय नमः।

अंगूठी धारण करने के पश्चात शनि की वस्तुओं का दान देना चाहिए। इससे शनि के अशुभ प्रभाव में कमी आयेगी तथा आपकी सुख शांति एवं समृध्दि में वृध्दि होगी।

श्री हनुमान चालीसा एवं श्री हनुमान अष्टक का पाठ करना श्रेष्ठ है ।

मांगलिक विचार

जब वर या कन्या की कुंडली में मंगल लग्न, चतुर्थ, सप्तम, अष्टम तथा द्वादश भाव में हो तो मांगलिक दोष कहलाता है। यथोक्तम्

लग्ने व्यये च पाताले जामित्रे चाष्टमे कुजे।
स्त्री भर्तुर्विनाशंच भर्ता च स्त्री विनाशनम्।।

मांगलिक दोष लग्न से अधिक प्रबल माना जाता है लेकिन चन्द्रमा से इसका दोष लग्न की अपेक्षा अल्प होता है। यदि शास्त्रानुसार वर एवं कन्या का मांगलिक दोष भंग हो जाता है तो उनका दाम्पत्य जीवन सुख एवं प्रसन्नतापूर्वक व्यतीत होता है। इसके विपरीत बिना दोष भंग हुए मांगलिक वर-कन्याओं को जीवन में कई प्रकार की अनावश्यक समस्याओं तथा व्यवधानों का सामना करना पड़ता है। अतः विवाह से पूर्व शुद्ध कुण्डली मिलान से इस दोष का उचित निवारण करके ही दाम्पत्य जीवन प्रारम्भ करना चाहिए जिससे जीवन में शान्ति तथा सम्पन्नता बनी रहे।

==========

आपके जन्म समय में मंगल की स्थिति जन्म कुंडली में द्वादश भाव में स्थित है। अतः आप एक मांगलिक पुरुष हैं। परन्तु शास्त्रानुसार आपका मंगली दोष भंग हो रहा है। यह मंगल आपको अशुभ फलों की अपेक्षा शुभ फल ही अधिक मात्रा में प्रदान करेगा। इसके शुभ प्रभाव से आपका शारीरिक स्वास्थ्य उत्तम रहेगा तथा स्वभाव व्ययशील होगा परन्तु अशुभ कार्यों की अपेक्षा शुभ कार्यों पर ही आप अधिकांश व्यय करेंगे। साथ ही जीवन में समस्त सांसारिक भोग्य पदार्थों का भी आप प्रसन्नता पूर्वक उपभोग करने में समर्थ रहेंगे। आपकी पत्नी का स्वास्थ्य भी अच्छा रहेगा एवं आनन्द पूर्वक आप दाम्पत्य जीवन को व्यतीत करेंगे।

यद्यपि यह मंगल आपके लिए शुभ फलदायक है। इसके प्रभाव से आपके विवाह में विलम्ब हो सकता है। परन्तु विवाह कार्य अत्यन्त ही शान्त एवं सुखद रूप से सम्पन्न होगा। इसमें किसी भी प्रकार की अनावश्यक समस्याओं एवं व्यवधानों का आपको सामना नहीं करना पड़ेगा। साथ ही विवाह के पश्चात भी आपका दाम्पत्य जीवन सुखी एवं प्रेम पूर्वक व्यतीत होगा। इसके अतिरिक्त आप जीवन में समस्त आवश्यक सुख संसाधनों तथा अन्य भौतिक सामग्री से सुसम्पन्न रहेंगे। आपका शत्रु पक्ष भी हमेशा कमजोर रहेगा अतः इनसे आपको किसी भी प्रकार की असुविधा नहीं होगी।

आपकी जन्म कुण्डली में मंगल द्वादश भाव में स्थित है। अतः इसके शुभ प्रभाव से आप शुभ कार्यों पर व्यय करने में सर्वदा रुचिशील रहेंगे तथा समस्त भोग्य पदार्थों को अर्जित तथा उपभोग करने में सफल रहेंगे। इसकी तृतीय भाव पर दृष्टि से आपके पराक्रम में नित्य वृद्धि होगी तथा आप निर्भय होकर अपने समस्त कार्यों को सम्पन्न करेंगे। लोगों में अपना प्रभाव स्थापित करने में भी समर्थ रहेंगे। साथ ही भाई बहनों से भी आप युक्त रहेंगे। जीवन में उनसे वांछित सुख एवं सहयोग भी प्राप्त कर सकेंगे। षष्ठ भाव पर दृष्टि होने से शत्रु पक्ष प्रायः निर्बल रहेगा। आपका विरोध करने में वे सर्वदा असमर्थ रहेंगे। सप्तम भाव पर मंगल की दृष्टि भावी जीवन साथी के लिए शुभ ही रहेगी। इससे आपकी पत्नी का स्वास्थ्य अच्छा रहेगा परन्तु स्वभाव में यदा कदा उग्रता का भी समावेश होगा। आपके प्रति उनके मन में पूर्ण समर्पण की भावना रहेगी तथा आपके परस्पर संबंध भी

घनिष्ठ एवं प्रेम पूर्वक रहेंगे। अतः आपका दाम्पत्य जीवन अत्यन्त ही आनन्द पूर्वक व्यतीत होगा एवं अनावश्यक व्यवधान तथा समस्याओं का प्रायः अभाव रहेगा।

अपने दाम्पत्य जीवन को अधिक सुखी एवं आनन्दमय बनाने के लिए आपको किसी गैर मांगलिक या ऐसी मांगलिक कन्या से विवाह करना चाहिए जिसका मांगलिक दोष उचित रूप से भंग हो रहा हो। इस प्रकार यदि आप अपना दाम्पत्य जीवन प्रारम्भ करेंगे तो जीवन में सर्व सौभाग्य, धनैश्वर्य, मान सम्मान तथा प्रतिष्ठा युक्त होकर समाज में पूर्ण यश प्राप्त करने में सफल रहेंगे।

इसके अतिरिक्त जन्म कुण्डली मिलान के समय यदि कन्या के द्वादश भाव में मंगल हो तो आवश्यक होने पर ही विवाह करें क्योंकि समान भावों में मंगल होने से जीवन में यदा कदा अनावश्यक समस्याएं उत्पन्न होती रहेंगी जिससे दाम्पत्य जीवन में तनाव भी उत्पन्न हो सकता है। अन्य भावों में स्थित मंगल होने से दोष समाप्त हो जायेगा एवं जीवन सुख एवं शान्ति पूर्वक व्यतीत होगा। अतः अन्तिम निर्णय अत्यन्त ही सूझ बूझ से लेना चाहिए जिससे भावी दाम्पत्य जीवन में किसी भी प्रकार की समस्याएं उत्पन्न न हो सकें।

कालसर्प योग

अग्रे राहुरधः केतुः सर्वे मध्यगताः ग्रहाः।
योगाऽयं कालसर्पाख्यो शीघ्रं तं तु विनाशय।।

आगे राहु हो एवं नीचे केतु मध्य में सभी (सातों) ग्रह विद्यमान हो तो कालसर्प योग बनता है। अतः इस योग से ग्रसित जातकों के लिए आवश्यक है कि वे इस काल सर्प योग का निदान करा लें। जिससे कि कुंडली के शुभ योगों के फल पूर्णयता मिलते रहें।

द्वादाश भावों में राहु की स्थिति के अनुसार काल सर्प योग मुख्यतः द्वादश प्रकार के होते हैं। वे हैं–

1. अनंत 2. कुलिक 3. वासुकि 4 शङ्खपाल 5. पद्म 6. महापद्म 7. तक्षक 8. कर्कोटक

9. शङ्खचूड 10. घातक 11. विषधर एवं 12. शेषनाग।

यह योग उदित अनुदित भेद से दो प्रकार के होते हैं राहु के मुख में सभी सातों ग्रह ग्रसित हो जाएं तो उदित गोलार्द्ध नामक योग बनता है एवं राहु की पृष्ठ में यदि सभी ग्रह हों तो अनुदितन गोलार्द्ध नामक योग बनता है।

यदि लग्न कुंडली में सभी सातों ग्रह राहु से केतु के मध्य में हो लेकिन अंशानुसार कुछ ग्रह राहु केतु की धुरी से बाहर हों तो आंशिक काल सर्प योग कहलाता है। यदि कोई एक ग्रह राहु–केतु की धुरी से बाहर हो तो भी आंशिक काल सर्प योग बनता है।

यदि राहु से केतु तक सभी भावों में कोई न कोई ग्रह स्थित हो तो यह योग पूर्ण रूप से फलित होता है। यदि राहु–केतु के साथ सूर्य या चंद्र हो तो यह योग अधिक प्रभावशाली होता है। यदि राहु, सूर्य व चंद्र तीनों एक साथ हो तो ग्रहणकाल सर्प योग बनता है। इसका फल हजार गुना अधिक हो जाता है। ऐसे जातक को काल सर्प योग की शांति करवाना अति आवश्यक होता है।

काल सर्प योग का प्रभाव

इस योग में उत्पन्न जातक को मानसिक अशांति, धनप्राप्ति में बाधा, संतान अवरोध एवं गृहस्थी में प्रतिपल कलह के रूप में प्रकट होता है। प्रायः जातक को बुरे स्वप्न आते हैं । कुछ न कुछ अशुभ होने की आशंका मन में बनी रहती है। जातक को अपनी क्षमता एवं कार्यकुशलता का पूर्ण फल प्राप्त नहीं होता है, कार्य अक्सर देर से सफल होते हैं। अचानक नुकसान एवं प्रतिष्ठा की क्षति इस योग के लक्षण हैं।

जातक के शरीर में वात पित्त त्रिदोषजन्य असाध्य रोग अकारण उत्पन्न होते है। ऐसे रोग जो प्रतिदिन क्लेश (पीडा) देते हैं तथा औषधि लेने पर भी ठीक नहीं होते हों, काल सर्प योग के कारण होते हैं।

काल सर्प योग के औपचारिक उपाय के द्वारा इन कष्टों से राहत एवं छुटकारा प्राप्त किया जा सकता है। जन्मपत्रिका के अनुसार जब–जब राहु एवं केतु की महादशा, अंतर्दशा आदि आती है तब तब यह योग असर दिखाता है। गोचर में राहु व केतु का जन्मकालिक राहु–केतु व चंद्र पर भ्रमण भी

इस योग को सक्रिय कर देता है। उस समय विशेष ध्यान देकर पूजा अर्चनादि श्रद्धा विश्वास के साथ करें, अवश्य लाभ होगा। कालसर्प योग यंत्र के सम्मुख 43 दिन तक सरसों के तेल का दीया जलाने से भी इन कष्टों से राहत एवं छुटकारा प्राप्त किया जा सकता है।

जातक पर कालसर्प योग का प्रभाव

आपकी जन्मपत्रिका में काल सर्प योग विद्यमान नहीं है। अतः आपको इस योग के लिए शांति आदि की आवश्यकता नहीं है एवं आप पूर्णरूप से सुखी जीवन व्यतीत कर सकेंगे।

संक्षिप्त विवरण

आपका जन्म रोहिणी नक्षत्र के प्रथम चरण में होना आपके उज्जवल भविष्य का द्योतक है। जिस समय आपका जन्म हुआ था। उस समय मेदिनीय क्षितिज पर बृष लग्न के साथ–साथ मेष राशि का नवमांश एवं कन्या राशि का द्रेष्काण उदित था। परिणामस्वरूप आपका भविष्य पूर्णता युक्त एवं अन्य ग्रहों के सुप्रभाव से राजयोग का निर्माता है। अस्तु आपका जीवन स्तर बहुत उत्तम रहेगा। आपके जन्म का स्वरूप पूर्णतः आपके अनुकूल प्रतीत होता है। आप अपने जीवन का नेतृत्व कर, सुखद एवं सरलता पूर्वक धन संपत्ति से युक्त तथा आनंददायक पारिवारिक जीवन व्यतीत करेंगे। आपकी राशि का प्रतीक बैल है। जो आपमें ईश्वरीय प्रदत्त सदगुणों की समृद्धता प्रकट करता है। आप मृदुभाषी एवं सत् चित्त युक्त है, तथा आप बिना किसी के सहयोग से नहीं मात्र अपने प्रयास से उन्नति प्राप्त करेंगे। क्योंकि यह गुण आप में विद्यमान है। अन्य की तुलना में आप भक्ति भावना से युक्त हैं, तथा आप में गंभीर विषयों के संपादन का निर्देशन शक्ति परिलक्षित होता है।

बुनियादी तौर पर आप किसी के भी साथ व्यक्तिगत रूप से शांतिपूर्ण प्रेमसंबंध स्थापित करते हैं। आप दूसरों के वाद–विवाद से बच कर अथवा प्रेम संबंध में मध्यस्थता नही चाहते हैं। परंतु यदि कोई किसी भी अवसर पर आपको उत्तेजित करता है, प्रतिक्रिया स्वरूप आप उस पर हिंसात्मक प्रहार करते हैं। आपको पूर्ण रूपेण इस प्रवृत्ति को त्याग कर, अपने आवेग को नियंत्रित रखना चाहिए।

आपकी विस्तृत मित्र या मित्र मंडली के द्वारा उत्कृष्ट धन या भूमि का लाभांश की प्राप्ति सहयोगात्मक भावना से युक्त होकर अंतर आत्मा से सहायता आवश्यक है।

आप पूंजी निवेश, कठिन परिश्रम तथा सुनियोजित कार्यक्रम द्वारा अधिक धन संग्रह करेंगे। परंतु आप इस प्रकार के समतल आय से संतुष्ट नही होंगे। क्योंकि वास्तव में आपका संबंध क्षेत्र विस्तृत है। इसलिए आप उच्चशिखर तक धन संपत्ति संग्रह करना चाहते हैं।

इस प्रकार स्पष्ट होता है कि आपमें पूर्ण रूपेण धन लो लुप्तता विद्यमान है। प्रायः आपकी कृपणता पर ही आपका अस्तित्व निर्भर करता हैं क्योंकि आपकी मुट्ठी बंधी हुई अर्थात् हृदय अनुदार है।

शारीरिक रूप से आप मध्यम कद के साथ ही चौड़े कंधे एवं उन्नत मांसल स्वस्थ्य एवं प्रसन्नचित्त मुखाकृति के प्राणी होंगे। आपकी ललाट उन्नत, गर्दन झुकी हुई एवं आंखें चमकीली होगी। आपका पारिवारिक वातावरण अन्यों की द्वारा इर्ष्यायुक्त रहेगी। आपके पति–पत्नी का स्नेहमय प्रवृत्ति से आपका घरेलू जीवन प्रसन्नता पूर्ण एवं सगे संबंधियों के साथ प्रगाढ़ मैत्रीपूर्ण तथा सुव्यवस्थित संबंध रहेगा। आप अपने (घर) भवन की सजावट अच्छे–अच्छे साज शय्याओं से युक्त तथा शरीर के लिए आरामदायक वस्तुओं से सुसज्जित रखेंगे। वर्त्तमान काल रंग–बिरंगे चित्रों को पंक्तिबद्ध तरीके से बहुत मात्रा में सुव्यवस्थित ढंग से अपने घर में लगाते हैं।

इसके अतिरिक्त आप पूर्णरूपेण स्वस्थ्य शरीर धारण कर, जीवन का उत्तम आनंद प्राप्त करेंगे। आयु वृद्धि के साथ–साथ आपको गले रोग, कफ एवं शीतप्रकोप, पैर के सूजन आदि रोगों की संभावना के प्रति सतर्क रहें।

अंगिरा मॉडर्न कम्प्यूटर्स, ब्यावर रोड, रामगंज, अजमेर (राज.)
फोनः- +91-9414258795, 9887073882, 0145-2693706
वेबः-www.Angirajyotish.com, ई-मेलः-mail@angirajyotish.com

आपके लिए व्यवसायिक कार्य हेतु जलीय वस्तुओं का व्यवसाय जैसे मोती, मछलीपालन, सिंघाड़े की खेती आइस क्रीम व्यवसाय, प्रॉप्रार्टी डीलरशिप, भवन संबंधी कार्य एवं ऑटोमोबाइल्स तथा पेट्रोल संबंधित कार्य अनुकूल रहेगा।

आपके लिए भाग्यशाली एवं प्रभावशाली अंक 2 एवं 8 अंक है। अंक 7 एवं 9 अंक भी आपके लिए आकर्षक अंक है। परंतु अंक 5 आपके लिए अनुकूल नही रहेगा। अस्तु इस तारीख से सतर्क रहें।

आप अपनी योजनाओं एवं कार्यक्रमों को तथा महत्वपूर्ण एवं विस्तृत कार्यों का संपादन सोमवार, बुधवार, शुक्रवार तथा शनिवार को आरंभ करें, संबंधित दिन आपके लिए अनुकूल एवं भाग्यशाली है।

आपके लिए रंग (श्वेत) सफेद गुलीबी, एव हरा रंग अनुकूल है। परंतु लाल रंग आपके लिए सर्वथा त्यागनीय है।

अथ राशिनक्षत्रादि फलम्

आपका जन्म मघा नक्षत्र के चतुर्थ चरण में हुआ हैं। अतः आपकी जन्म राशि सिंह तथा राशि स्वामी सूर्य होगा। नक्षत्र के अनुसार आपका वर्ण क्षत्रिय, योनि मूषक, वर्ग मूषक, नाड़ी अन्त्य तथा गण राक्षस होगा। नक्षत्र के चरणानुार आपके जन्म नाम का प्रथम अक्षर "मे" से प्रारम्भ होगा यथा- मेहर सिंह

आप गण्डमूल नक्षत्र में उत्पन्न हुए हें। यद्यपि चतुर्थ चरण में पैदा होने से इसका अशुभ फल न्यून होता हैं। तथापि सावधानी वश इसकी शास्त्रोक्त विधि से शान्ति करा लेनी चाहिए। यह कार्य जन्म समय में ही सम्पन्न होना चाहिए। इसके लिए इस नक्षत्र के कम से कम २८००० जप करवाने चाहिए तथा २८वें दिन पुनः जब यह नक्षत्र आवे तो उस दिन जपे हुए मंत्रों के दशांश का हवन करना चाहिए। यह समस्त कार्य शास्त्रोक्त विधि विधान तथा योग्य विद्वान के द्वारा सम्पन्न करना चाहिए। ऐसा करने से जातक जीवन में सुख तथा आनन्द को प्राप्त करता हैं।

ऊँ पितृभ्यः स्वधायिभ्यः स्वधा नमः।
पितामहेभ्यः स्वधायिभ्यः स्वधा नमः।
प्रपितामहेभ्यः स्वधायिभ्यः स्वधा नमः।
अक्षन्नपितरो ळमीमवन्तः पितरोडतृप्यन्त पितरः शुन्धध्यम्।।

जातक परिजातः

आप अपने सम्पूर्ण जीवन काल में धनैश्वर्य तथा सेवकों से युक्त रहेंगे। धन की न्यूनता से आप कभी भी व्याकुल नहीं रहेंगे साथ ही समस्त भौतिक तथा सांसारिक सुखों का आप आनन्दपूर्वक उपभोग करने वाले होंगे। आप देवताओं तथा माता पिता के प्रिय भक्त होंगे तथा श्रद्धाभाव से इनकी सेवा करेंगे। साथ ही हमेशा उद्योग में तत्पर भी रहेंगे।

बहुभृत्यः धनो भोगी सुरपितृभक्तो महोद्यमः पित्रे।

बृहज्जातकम्

अर्थात् मघा नक्षत्र में उत्पन्न जातक धनवान, बहुत से नौकरों को रखने वाला, भोगैश्वर्य से सम्पन्न, माता पिता तथा देवताओं का भक्त एवं उद्योगी पुरूष होता है।

अपने श्रेष्ठ तथा वृद्धजनों के प्रति आपका असीम सेवा भाव रहेगा। आप साहस भरे कार्यों को करने में अति उत्सुक रहेंगे तथा इसमें सफलता भी प्राप्त करेंगे। फलतः आप सेना या पुलिस में कोई उच्चपद को प्राप्त कर सकेंगे। साथ ही राजकीय सेवा में भी आप सदैव तत्पर रहेंगे।

बहुभृत्यो धनी भोगी पितृभक्तो महोद्यमी।
चमूनाथा राजसेवी मघायां जायते नरः।।

मानसागरी

अर्थात् मघा में उत्पन्न जातक अधिक नौकरों वाला, धनवान, भोगी, पितृभक्त, महान उद्यमी, सेनापति तथा राजा की सेवा में तत्पर रहता है।

पल प्रति पल में ही रूप परिवर्तन करने की कला में आप अत्यन्त निपुण होंगे। उत्सवों के प्रति आपके मन में अत्यन्त ही लगाव तथा उत्सुकता रहेगी अतः आप इनके आयोजनों में पूर्ण सक्रियता से भाग लेगे तथा तन मन धन से अपना सहयोग भी प्रदान करेंगे। साथ ही आप सामान्य जनता के कोई उच्चाधिकारी भी हो सकते हैं।

बहुरूपो धनीभोगी पितृभक्तो महोत्सवी।
नरनाथो राजसेवी मघायां जायते नरः।।

जातकदीपिका

अर्थात् मघा में उत्पन्न जातक बहूरूपी, धनवान, ऐश्वर्य सम्पन्न, माता पिता का भक्त महान उत्सवी, मनुष्यों का स्वामी तथा राजा की सेवा करने वाला होता है।

आपके मन में कठोरता की बहुलता रहेगी तथा स्वभाव से भी आप उग्र रहेंगे। विद्यार्जन तथा ज्ञान प्राप्त करने में आप पूर्ण रूप से सफलता को प्राप्त करेंगे। आप बुद्धिमान तथा शत्रु को पराजित तथा नष्ट करने में चतुर होंगे। आप हमेशा पुण्य के कार्यों को करने में तत्पर रहेंगे तथा पापकर्मों में आपकी कोई रूचि नहीं रहेगी। आप कभी कभी अपनी अभिमानी प्रवृति का भी प्रदर्शन करेंगे। तथा स्त्री वर्ग के आप पूर्ण रूप से वश में रहेंगे तथा अपने समाज से आप पूर्ण मान सम्मान तथा आदर को प्राप्त करने में सफलता अर्जित करेंगे।

कठोरचित्तः पितृभक्तियुक्तस्तीव्र स्वभावस्त्वनवद्यविद्यः।
चेजन्मभं यस्य मघा नघः सन्मति सदाराति विघातदक्षः।।

जातकाभरणम्

अर्थात् मघा नक्षत्र का जातक कठोर हृदय वाला पिता का भक्त, तीव्र स्वभाव वाला, विद्यावान, पाप रहित, बुद्धिमान एवं शत्रु को जीतने वाला होता है।

आपका जन्म लौहपाद में हुआ है। यद्यपि लौह पाद में उत्पन्न जातक प्रायः धन के अभाव से दुःखी सुखसंसाधनों से हीन तथा अन्य प्रकार से जीवन में कष्ट प्राप्त करता है। परन्तु आपकी कुण्डली में चन्द्रमा शुभराशि में स्थित है। अतः आप अपने जीवन काल में जल से उत्पन्न होने वाले पदार्थो से नित्य लाभार्जन करते रहेंगे। आप एक धनवान पुरूष होंगे तथा अन्य चल अचल सम्पतियों के भी स्वामी बनेंगे। आप हमेशा नवीन वस्त्रों से युक्त रहेंगे एवं जीवन में वाहन आदि के सुख को प्राप्त करेंगे। साथ ही सुयोग्य संतति से भी आप युक्त रहेंगे। देवता एवं ब्राहमणों के प्रति आपके मन में श्रद्धा का भाव रहेगा तथा बन्धु एवं मित्रों से आपके संबंध अत्यन्त ही मधुर रहेंगे एवं उनसे आपको यथोचित सहयोग प्राप्त होता रहेगा। जीवन में आवश्यक भौतिक सुखसंसाधनो से आप प्रायः सुसम्पन्न रहेंगे। साथ ही दानशीलता का भाव भी आपके मन में विद्यमान रहेगा। जल क्रीडा के आप शौकीन होंगे तथा इससे हार्दिक

प्रसन्नता प्राप्त करेंगे।

सिंह राशि में उत्पन्न होने के कारण आप स्वभाव से उग्र तथा तेजस्वी होंगे। आपके कपोल तथा मुखमंडल विस्तीर्ण रहेंगे तथा आखे पीतवर्ण से युक्त छोटी होंगी। आप वन तथा पर्वतों की गुफाओं में भ्रमण करने के लिए उत्सुक रहेंगे कभी कभी आप अकारण ही शीघ्र क्रोधित भी हो जाएंगे। आप जीवन में मानसिक चिन्ताओं से ग्रसत रहेंगे। आप में दान शीलता का भाव भी विद्यमान रहेगा तथा अवसरानुकूल इस प्रवृति का भी आप पालन करते रहेंगे। आप यदा कदा अभिमान का भी प्रदर्शन करेंगे। माता के आप प्रिय रहेंगे तथा उनकी श्रद्धापूर्वक सेवा करना अपना प्रिय कर्तव्य समझेंगे। स्त्री वर्ग में आप खास रूचि का प्रदर्शन नहीं करेंगे। आपकी सन्तति में पुत्रों की संख्या अल्प मात्रा में ही रहेगी। आपकी बुद्धि स्थिर रहेगी तथा धैर्य पूर्वक कार्यों को सम्पन्न करेंगे।

तीक्ष्णः स्थूलहनुविशालवदनः पिङ्गेक्षणोळल्पात्मजः।
स्त्रीद्वेषी प्रियमासकाननगः कुप्यत्यकार्ये चिरम्।।
क्षुतृष्णोदरदन्तमानसरूजा सम्पीडितस्त्यागवान।
विक्रान्तः स्थिरधीः सुगर्वितमनामातुर्विधेयो योळर्कभे।।

बृहज्जातकम्

अर्थात् सिंह राशि में उत्पन्न जातक तेजस्वी, अमर्ष स्वभाव वाला, वृहत्कपोल तथा विस्तीर्ण मुख वाला, पीली आँखें, अल्प पुत्रों से युक्त, स्त्री द्वेषी, मांस, पर्वत तथा वन में रूचिशील अर्थात् शिकारी, अकारण क्रोधकर्ता, तृष्णा, क्षुधा, उदर, दान्त एवं मानसिक रोगों से पीडित, दान प्रिय, अभिमानी और माता पिता का भक्त होता है।

आपके शरीर की अस्थियां पुष्ट तथा सुडौल होंगी तथा शरीर में रोग भी अल्प मात्रा में ही विद्यमान रहेंगे। आपका कंठ भाग स्थूल रहेगा तथा स्वाभाविक उग्रता आपके स्वभाव में विराजमान रहेगी। कार्यारम्भ से पूर्व आप कोई न कोई ध्वनि अपने मुंह से अवश्य निकालेंगे। आपका वक्षस्थल विस्तृत तथा देखने में आकर्षक रहेगा। समाज में आप एक पराक्रमी पुरूष समझे जाएंगे। तथा सभी लोग आपके प्रभुत्व को स्वीकार करेंगे। इसके अतिरिक्त आप अत्यन्त चौकस प्रवृति के होंगे तथा किसी भी कार्य को प्रारम्भ करने से पूर्व सम्पूर्ण परिस्थितियों का गम्भीरता से अध्ययन करेंगे।

स्थूलास्थिर्मन्दरोमा पृथुवदनगलो ह्रस्वपिङ्गाक्षियुग्मः।
स्त्रीद्वेषी क्षुत्पिपासा जठररूदरजपीडितो मांसभक्षः।।
दातातीक्ष्णोळल्पपुत्रो विपिननगरतिमातृवश्य सुवक्षा।
विक्रान्तः कार्यालापी शशभृतिरविभे सर्वगम्भीर दृष्टिः।।

सारावली

अर्थात् सिंह राशि नक्षत्र में उत्पन्न जातक पुष्ट हडी वाला, अल्प रोगों से युक्त, स्थूलमुख तथा कंठ वाला, छोटी एवं पीली आँखों वाला, स्त्रीद्वेषी, भूख, प्यास, जठराग्नि व दन्त रोग से पीडित, माँसभक्षी, दानी, उग्र स्वभाव वाला, अल्प पुत्रों से युक्त, कार्यारम्भ में प्रलाप करने वाला, वन व पर्वत प्रेमी, माता का प्रिय, सुन्दर वक्षस्थल से युक्त विक्रमी तथा सर्वत्र गश्रमभीर दृष्टि से युक्त होता है।

आपकी ठोड़ी दृढ तथा मोटी होगी तथा मुखाकृति भी विशाल दृष्टिगोचर होगी। आप माता के प्रिय वत्सल रहेंगे तथा उनकी पूर्ण सेवा शुश्रूषा में तत्पर रहेंगे।

पिङ्गेक्षणः स्थूलहनुर्विशालवक्त्रोळभिमानी सपराक्रमः।
कुप्यत्कार्ये वनशैलगामी मातुर्विधेयः स्थिरधीः मृगेन्द्रेण।।

फलदीपिका

अर्थात् सिंह राशि का जातक छोटे पीले नेत्रों से युक्त मोटी ठोढ़ी, बडा चेहरा, अभिमानी, पराक्रमी, स्थिरबुद्धि वाला, माता का प्रिय, जंगल और पहाडों का भ्रमणप्रिय तथा छोटी छोटी बातों पर क्रोध करने वाला होता है।

आप पेट भर धनार्जन से सन्तुष्ट तथा शान्ति की अनुभूति करेंगे। आपका स्वभाव अमर्षपूर्ण तथा मांस का लोभी होगा। आप पर्वतों तथा पहाड़ों के भ्रमण के लिए हमेशा उत्सुक रहेंगे।

उदरभरणतुष्टः क्रोधनो मांसलुब्धो।
गहनगुरूगुहानां सेवको बंधुहीनः।।
कपिलनयन भग्नस्तुङ्गवक्षाः क्षुधार्तो।
विपुल सुरतसेवी सिंह राशि भे मनुष्यः।।

जातकदीपिका

अर्थात् सिंह राशि का जातक उदरपोषण में तुष्ट, क्रोधी, माँस का लोभी, जंगल में रहने को उत्सुक, सेवक, बंधुहीन, कपिल एवं भग्न नेत्र वाला, विशाल वक्षस्थल वाला, भूख से व्याकुल तथा मैथुन प्रेमी होता है।

आप स्वभाव से ही क्षमाशील प्रकृति के व्यक्ति होंगे तथा दण्ड की अपेक्षा क्षमा करने को प्राथमिकता प्रदान करेंगे। आप अपने किसी न किसी कार्य में हमेशा तत्पर रहेंगे तथा आलस्य की हमेशा उपेक्षा करने वाले होंगे। आप अधिकांश समय देश विदेश की यात्रा करने में व्यस्त रहेंगे। शीत से आपको अधिक डर लगेगा। समाज में अन्य जनों के प्रति आपका व्यवहार विनयशीलता से युक्त रहेगा जिससे सभी लोग आपसे प्रभावित रहेंगे तथा आपकी प्रशंसा करेंगे। साथ ही माता पिता से आपका विशेष प्रेम तथा श्रद्धा का भाव रहेगा। आप कई व्यसनों के भी करने वाले होंगे। आप अपने समाज में एक यशस्वी तथा कीर्तिशाली पुरूष होंगे तथा सामाजिक सम्मान से सर्वथा युक्त रहेंगे साथ ही आप अच्छे तथा गुणवान मित्रों के भी मित्र होंगे।

अचल काननयानमनोरथं गृहकलित्रच गलोदरपीडनम्।
द्विजपतिमृर्गराजगतो नृणांवितनुते तनुतेजविहीनताम्।।

जातकाभरणम्

अर्थात् सिंह राशि में उत्तपन्न जातक वन और पहाङ में विहार करने वाला, घर में कलह करने वाला, कंठ अैर उदर में रोग वाला तथा शरीर की कान्ति से हीन रहता है।

क्षमायुक्तः क्रियाशक्तो मद्यमांसरतः सदा।
देशभ्रमणशीलश्च शीतभीतः सुमित्रकः।।
विनयी शीघ्रक्रोधी च जननीपितृवल्लभः।
व्यसनी प्रकटोलोके सिंह राशौ भवेन्नरः।।

मानसागरी

अर्थात् सिंह राशि में उत्पन्न जातक क्षमाशील, क्रियाओं में रत, मद्य तथा माँस खाने वाला, सदा देशान्तरों में भ्रमणशील, शीत से भयभीत होने वाला, सुमित्रों से युक्त, विनयशील, शीघ्र क्रोध करने वाला, माता पिता का प्रेमी, व्यसनी तथा संसार में प्रसिद्ध होता है।

आपकी आखें तथा शारीरिक सरंचना अत्यन्त ही सुन्दर एवं मनोहर होगी। आपकी दृष्टि गम्भीरता से युक्त रहेगी तथा गम्भीरतापूर्वक परिस्थितियों का अवलोकन करने के बाद ही आप किसी कार्य को प्रारम्भ करेंगे। साथ ही आप जीवन को सुख पूर्वक व्यतीत करने में सफल रहेंगे।

सिंहस्थे पृथुलोचनः सुबदनो गम्भीरदृष्टिः सुखी।।

जातक परिजातः

अर्थात सिंह राशि में उत्पन्न पुरूष विशाल नेत्रों वाला, अच्छे शरीर का स्वामी, गम्भीर दृष्टि तथा सुखी रहने वाला होता है।

राक्षस गण में उत्पन्न होने के कारण आपकी प्रवृति कभी कभी व्यर्थ एवं अधिक बोलने वाली होंगी। आपके मन में भी दया का भाव अल्प मात्रा में रहेगा। परन्तु साहस का आप में अभाव नहीं होगा तथा अपने समस्त कार्यों को साहस पूर्वक सम्पन्न करेंगे। आपको शीघ्र ही छोटी छोटी बातों पर क्रोध आएगा तथा अपने काम को बनाने के लिए नित्य प्रयत्नशील रहेंगे।

अनल्पजल्पश्च कठोरचित्तः स्यात्साहसी क्रोधपरोद्धतश्च।
दुःशीलवृतः कलीकृत्वलीमान रक्षोगणोत्पन्नरो विरोधी।।

जातकभरणम्

अर्थात् राक्षस गण में उत्पन्न जातक व्यर्थ बोलने वाला, कठोर, साहसी, अकारण ही क्रोधित होने वाला, नीच प्रकृति से युक्त, झगडू, बलवान तथा अन्य लोगों का विरोधी होता है।

आप उन्माद तथा प्रमेह रोग से भी पीड़ित हो सकते हैं। साथ ही आपका रूप भी सामान्य सुन्दर होगा। आप कभी कभी अपने सम्भाषण में में कटु शब्दों का प्रयोग करेंगे जिससे अन्य जनों को कष्ट की अनुभूति होगी। अतः यत्नपूर्वक आपको मधुर एवं सरल शब्दों का उपयोग करना चाहिए।

उन्मादी भीषणाकारः सर्वदाकलहप्रियः।
पुरूषोदुस्सहब्रूते प्रमेही राक्षणे गणे।।

मानसागरी

अर्थात् राक्षस गण का जातक उन्मादी, भीषण आकृति वाला, झगड, कटुभाषी तथा प्रमेह का रोगी होता है।

मूषक योनि में पैदा होने के कारण आप तीव्र बुद्धि के स्वामी होंगे तथा धनैश्वर्य एवं वैभव से हमेशा अपने जीवन काल में परिपूर्ण रहेंगे। धनाभाव कभी भी नहीं रहेगा। आप हमेशा अपने कार्यों को सम्पन्न करने में तत्पर रहेंगे। खाली बैठना आपको अच्छा नहीं लगेगा। अतः सक्रियता के लिए कुछ न कुछ अवश्य करते रहेंगे। आलस्य का आपके अन्दर सर्वथा अभाव रहेगा। परन्तु आप अन्य लोगों पर कम ही विश्वास करेंगे। यदि आप अन्य जनों से कोई कार्य करवाना चाहते होंगे तो उसे अपने ही समक्ष पूर्ण करायेंगे।

बुद्धिमान् वित्तसम्पूर्णः स्वकार्यकरणोद्यतः।
अप्रमतोळप्यविश्वासी नरो मूषक योनिजः।।

मानसागरी

अर्थात मूषक योनि का जातक बुद्धिमान, धनवान, स्वकार्य में तत्पर, गर्वहीन तथा किसी पर भी विश्वास न करने वाला होता है।

आपके जन्म समय में चन्द्रमा की स्थिति शुभ राशि में स्थित होकर चतुर्थ भाव में हैं। अतः आपकी माता का स्वास्थ्य अत्यन्त ही उत्तम रहेगा तथा आपके ग्रहों के शुभ प्रभाव से वे धन सम्पत्ति तथा कई अन्य सुख संसाधनों को प्राप्त करने में सफल होंगी। साथ ही आप भी उनसे समस्त सुखसंसाधनों को प्राप्त करेंगी। तथा उनके सहयोग तथा मार्ग निर्देशों से आप जीवन में सफलता प्राप्त करेंगे।

आप की भी उनके प्रति पूर्ण श्रद्धा एवं सम्मान की भावना होगी तथा उनकी आज्ञा का पालन करने के लिए सर्वदा तत्पर रहेंगे। साथ ही जीवन में आप उनको पूर्ण सुख सुविधाएं प्रदान करना अपना प्रिय कर्तव्य समझेंगे एवं यत्नपूर्वक इसे पूर्ण करने के लिए अत्यन्त ही सौभाग्यशाली सिद्ध होंगे।

आपके जन्म काल में सूर्य की स्थिति शुभ राशि में होकर द्वादश भाव में है अतः आपके शुभ प्रभाव से पिता का स्वास्थ्य अच्छा रहेगा। आपके प्रति उनके मन में पूर्ण स्नेह का भाव रहेगा। धन धान्य से वे सर्वदा युक्त रहेंगे एवं जीवन में समस्त शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में आपको अपना सहयोग प्राप्त करेंगे। उनकी प्रवृति दानशील रहेगी एवं आपको भी वे दानशीलता आदि गुणों का अनुपालन करने के लिए नित्य प्रेरणा तथा उपदेश देते रहेंगे।

आपकी भी उनके प्रति पूर्ण हार्दिक श्रद्धा एवं सम्मान की भावना रहेगी एवं उनकी आज्ञा पालन करने के लिए भी आप हमेशा तत्पर रहेंगे। आपके आपसी संबंध भी मधुर होंगे एवं परस्पर मतभेदों का प्रायः अभाव ही रहेगा। साथ ही जीवन में आप सर्वप्रकार से सुख दुःख में पिता की सेवा एवं सहायता करने के लिए सर्वदा तत्पर रहेंगे। इस प्रकार एक दूसरे के लिए आप प्रायः शुभ ही रहेंगे।

आपके जन्म समय में मंगल की स्थिति द्वादश भाव में है अतः भाई बहिनों से आप स्नेह तथा सम्मान अर्जित करने में सफल रहेंगे। उनका स्वास्थ्य भी अच्छा रहेगा एवं धन वैभव से वे सर्वदा युक्त रहेंगे। जीवन में वे आपको अधिक से अधिक सहयोग प्रदान करने के लिए तत्पर रहेंगे। साथ ही पुण्य एवं शुभकार्यों के लिए भी आपको प्रेरित करते रहेंगे। इसके साथ ही सुख दुःख में वे हमेशा आपके साथ रहेंगे।

आपके हृदय में भी उनके प्रति पूर्ण सम्मान एवं स्नेह का भाव रहेगा तथा आपसी संबंध भी मधुर रहेंगे। आपके मध्य मतभेदों का अभाव रहेगा एवं एक दूसरे पर पूर्ण विश्वास का भाव रखेंगे। साथ ही जीवन में उन्हें आर्थिक तथा सुख दुःख में वांछित सहयोग देने के लिए सर्वदा उद्यत रहेंगे।

आपके लिए ज्येष्ठ मास, तृतीया अष्टमी, त्रयोदशी तिथियां, मूल नक्षत्र, धृतियोग, ववकरण, शनिवार, प्रथम प्रहर तथा मकर राशि में स्थित चन्द्रमा अशुभ फल देने वाले होंगे। अतः आप १५ मई से १४ जून के मध्य ३,८,१३ तिथियों, मूल नक्षत्र, धृतियोग तथा बवकरण में कोई भी शुभ कार्य व्यापार प्रारम्भ, नवगृहनिर्माण, क्रयविक्रयादि अन्य महत्वपूर्ण कार्यों को सम्पन्न न करें अन्यथा लाभ की अपेक्षा हानि ही होगी। साथ ही शनिवार, प्रथम प्रहर तथा मकर राशि के चन्द्रमा को भी शुभ कार्यों में वर्जित रखे। इन दिनों तथा समय में शारीरिक सुरक्षा तथा स्वास्थ्य के प्रति भी सजग रहना चाहिए।

यदि आपके लिए समय अशुभ चल रहा हो मानसिक तथा शारीरिक व्याकुलता की अनुभूति हो रही हो अथवा व्यापार नौकरी पदोन्नति अथवा अन्य कार्यों में सफलता न मिल रही हो या अन्य बाधाएं उत्पन्न हो रही हों तो ऐसे समय में आपको अपने इष्ट सूर्य भगवान को अर्ध्य देना चाहिए तथा उपासना भी करनी चाहिए। इसके साथ ही रविवार का उपवास भी श्रेष्ठ फलदायक रहेगा एवं लाल वस्त्र, लाल फूल, सोना, माणिक्य, गुड़, गेहूं इत्यादि पदार्थो का श्रद्धापूर्वक दान करना चाहिए। इसके अतिरिक्त सूर्य के तांत्रीय मंत्र के कम से कम ७००० जप किसी योग्य विद्वान से सम्पन्न करवाने चाहिए इससे आपको मानसिक शान्ति प्राप्त होगी तथा अशुभ फल कम होकर शुभ फलों में वृद्धि होगी तथा सर्वत्र लाभमार्ग प्रशस्त होंगे।

ॐ ह्रां ह्रीं ह्रौं सः सूर्याय नमः।

शारीरिक गठन, व्यक्तित्व एवं प्रकृति

आपके जन्म समय में लग्न में वृष राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी शुक्र है। सामान्यतया वृष लग्न में उत्पन्न जातक सुदंर उदार तथा सहिष्णु स्वभाव के होते हैं। उनकी वाणी में भी मधुरता का भाव विद्यमान रहता है। साथ ही व्यक्तित्व भी आकर्षक होता है तथा अन्य जनों को प्रभावित करने में वे समर्थ रहते हैं। शारीरिक रूप से उनका स्वास्थ्य अच्छा रहता है तथा मानसिक सन्तुष्टि भी उनकी बनी रहती है। ये अत्याधिक परिश्रमी जातक होते हैं तथा परिश्रम करने की उनकी अपूर्व क्षमता रहती है जिससे जीवन में उन्नति मार्ग प्रशस्त करने तथा सुखैश्वर्य एवं वैभव अर्जित करने में वे प्रायः सफल रहते हैं। शांति एवं सहिष्णुता के साथ इनमें साहस तथा पराक्रम का भाव भी विद्यमान रहता है।

अतः इसके प्रभाव से आपका व्यक्तित्व आकर्षक रहेगा तथा सभी लोग आपसे प्रभावित रहेंगे। अपने वाक्चातुर्य से शुभ एवं महत्वपूर्ण सांसारिक कार्यों को सिद्ध करने में भी सफल होंगे। आपका शारीरिक कद मध्यम होगा परन्तु स्वरूप सुदंर एवं आकर्षक होगा। आप में सहनशीलता का भाव भी विद्यमान होगा।

आप एक परिश्रमी पुरूष होंगे तथा अपनी योग्यता एवं परिश्रम से किसी उच्च पद या समाज में प्रतिष्ठित स्थान प्राप्त करेंगे साथ ही अपने सदगुणों के द्वारा श्रेष्ठ जनों को सन्तुष्ट करने में सफल होंगे। आप एक विद्वान पुरूष होंगे तथा विभिन्न विषयों कला साहित्य एवं संगीत का आपको उचित ज्ञान रहेगा तथा इस क्षेत्र में प्रसिद्धि भी प्राप्त होगी।

लग्न में शुक्र की स्थिति के प्रभाव से शारीरिक एवं मानसिक रूप से आप स्वस्थ तथा प्रसन्न रहेंगे तथा उत्साह एवं परिश्रम पूर्वक अपने सांसारिक कार्यों को सम्पन्न करेंगे। दानशीलता का भाव भी आप में विद्यमान होगा तथा समय समय पर जरूरतमन्दों को दान देने में तत्पर रहेंगे। आप एक बुद्धिमान पुरूष होंगे तथा आपके कार्य कलापों पर बुद्धिमता की स्पष्ट छाप होगी।

धर्म के प्रति आप श्रद्धालु रहेंगे तथा अवसरानुकूल धार्मिक अनुष्ठानों तथा कार्य कलापों को सम्पन्न करेंगे। धार्मिक क्षेत्र में आप किसी संस्था से सम्बंधित हो सकते हैं या इस क्षेत्र में आपको कोई विशिष्ट सफलता या प्रतिष्ठा प्राप्त हो सकती है।

आप में उदारता तथा सहनशीलता का भाव भी विद्यमान रहेगा तथा अवसरानुकूल आप समाज सेवा के लिए भी उद्यत रहेंगे। आपकी प्रवृति सात्विक होगी तथा विचार भी उत्तम होंगे। साथ ही परोपकार की भावना भी विद्यमान होगी। इसके अतिरिक्त कई शास्त्रों का आपको ज्ञान होगा जिससे आपको सामाजिक मान प्रतिष्ठा तथा प्रसिद्धि प्राप्त होगी।

इस प्रकार आप स्वस्थ सुदंर आकर्षक व्यक्तित्व विद्वान एवं साहसी पुरूष होंगे तथा प्रसन्नतापूर्वक आपका जीवन व्यतीत होगा।

धन, परिवार, आंख एवं वाणी

आपके जन्म समय में द्वितीय भाव में मिथुन राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी बुध है। अतः इसके प्रभाव से आप की प्रवृति धनसंग्रह करने की रहेगी तथा वर्तमान एवं भविष्य के लिए प्रचुर मात्रा में धन अर्जित करके उसका संग्रह करेंगे इससे आपकी आर्थिक स्थिति सन्तुलित रहेगी। साथ ही जायदाद या स्वर्ण आदि धातुओं पर पूंजीनिवेश करेंगे तथा इससे आपको प्रचुर मात्रा में लाभ प्राप्त होगा। आपका पारिवारिक जीवन सुख एवं शान्ति से युक्त रहेगा तथा उनकी खुशहाली के लिए आप सदैव प्रयत्नशील रहेंगे तथा पारिवारिक जनों से आपको पूर्ण सहयोग भी प्राप्त होता रहेगा।

सामान्यतया आपको सभी स्वाद रूचिकर लगेंगे परन्तु मिष्ठान के प्रति विशेष रूचिशीलता का प्रदर्शन करेंगे। चूंकि यह भाव वाणी का प्रतिनिधित्व करता है तथा इसका स्वामी बुध होने के कारण आपकी वाणी मृदु तथा प्रभाव शाली रहेगी तथा अन्य जनों को अपनी वाणी से प्रभावित करने में समर्थ रहेंगे। साथ ही विचारों की अभिव्यक्ति भी कुशलता पूर्वक करेंगे परन्तु अवसरानुकूल आप अपने विचारों में परिवर्तन भी कर सकते है। यदि आप यह अनुभव करते है कि इस समय के लिए यह विचार ठीक नहीं है। आतिथ्य सत्कार की भावना भी आपके मन में विद्यमान रहेगी। इसके अतिरिक्त स्त्री वर्ग से आपको उचित लाभ समय समय पर मिलता रहेगा तथा वाहन एवं बहुमूल्य रत्नों की भी प्राप्ति होगी। इसके साथ ही धार्मिक एवं सज्जन प्रवृति के लोगों से आप सामान्यतया मित्रता करना पसन्द करेंगे।

पराक्रम, सहोदर, प्रकाशन, लघुयात्राएं

आपके जन्म समय में तृतीय भाव में कर्क राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी चंद्रमा है। अतः इसके प्रभाव से आप अपने भाई बहिनों के प्रति उदार भावुक तथा अत्यंत ही सहानुभूति का व्यवहार रखेंगे। आप उनसे अत्यधिक प्रेम करेंगे तथा उनकी सुख सुविधा का पूर्ण ध्यान रखेंगे परन्तु इसके बाद भी उनसे आपको यथोचित सम्मान तथा आदर अल्प मात्रा में ही प्राप्त होगा। कभी कभी परिस्थिति के अनुकूल आप असाधारण साहस तथा पराक्रम का प्रदर्शन करेंगे। आप एक बुद्धिमान पुरूष होंगे तथा नैतिकता का यत्नपूर्वक अनुपालन करते रहेंगे। भाई बहिनों के प्रति समयानुसार आप अपने को परिवर्तन करने में समर्थ रहेंगे। आपकी स्मरण शाक्ति तीव्र रहेगी तथा ऐतिहासिक घटनाओं को याद रखने में सफल रहेंगे। साथ ही भाई बहिनों के प्रति आपका क्रोध भी क्षणिक रहेगा तथा शीघ्र ही उनसे प्रसन्न हो जाएंगे।

जीवन में आप एक कर्तव्य परायण व्यक्ति रहेंगे तथा यत्नपूर्वक अपनी जिम्मेदारियों को पूर्ण करेंगे। आपकी सीखने या याद करने की शक्ति तीव्र होगी अतः किसी से कोई नवीन ज्ञान अर्जित करने में समर्थ रहेंगे। साथ ही उच्च शिक्षा या दर्शन शास्त्र के प्रति भी आपकी रूचि रहेगी। आप सामाजिक जनों की भी यथाशाक्ति सेवा करेंगे। अतः अपने इन कार्यो से श्रखयाति भी प्राप्त होगी। आप किसी भी उददे्श्य को कार्य रूप में परिवर्तित करने के लिए साहसिक निर्णय लेने में हमेशा समर्थ रहेंगे अतः यदा कदा आप समूह के नेतृत्व को भी प्राप्त कर सकते हैं। आप समाज सेवा, लेखन या किसी नवीन आविष्कार से प्रसिद्धि प्राप्त कर सकते है। साथ ही संचार की सुविधाओं से आप युक्त रहेंगे तथा संचार के क्षेत्र में आजीविका आदि भी कर सकेंगे। प्रकाशक संपादक या संवाददाता के रूप में आपको सफलता प्राप्त हो सकती है। इसके अतिरिक्त आप वैश्य वर्ग के मित्र रहेंगे तथा परिश्रम पूर्वक अपने घर एवं परिवार का पालन पोषण करेंगे। इसके अतिरिक्त धर्म के प्रति आपकी रूचि रहेंगी तथा शील स्वभाव भी उत्तम रहेगा।

माता, वाहन, भौतिक ऐश्वर्य, जायदाद एवं शिक्षा

आपके जन्मसमय में चतुर्थ भाव में सिंह राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी सूर्य है तथा चन्द्रमा भी मित्र राशि में चतुर्थ भाव में ही स्थित है। अतः इसके शुभ प्रभाव से आप जीवन में सुख-संसाधनों से युक्त रहेंगे तथा प्रसन्नता पूर्वक अपना जीवन व्यतीत करेंगे । आप ऐश्वर्यशाली व्यक्ति होंगे तथा स्वपरिश्रम एवं योग्यता से अपनी समृद्धि को बनाएं रखेंगे। इससे आप समाज में आदरणीय व्यक्ति माने जायेंगे तथा आपका स्तर भी इसी के अनुकूल होगा।

जीवन में चल एवं अचल सम्पत्ति के स्वामित्व को आप अवश्य प्राप्त करेंगे। यद्यपि इसको अर्जित करने में आपकी योग्यता एवं अथक परिश्रम की बहुलता होगी तथापि पिता के द्वारा या सहयोग से भी आप वांछित मात्रा में सम्पत्ति को प्राप्त करेंगे। इसके आपके वैभव एवं एश्वर्य में वृद्धि होगी। इसके अतिरिक्त मातृकारक चन्द्रमा की चतुर्थ भाव में स्थिति के प्रभाव से माता का सहयोग भी सम्पत्ति अर्जित करने में आपके लिए सहायक सिद्ध होगा।

आप को गृहसुख भी अच्छा मिलेगा तथा किसी अच्छे घर में निवास करेंगे। यद्यपि यह अधिक विस्तृत नहीं होगा तथापि जो भी क्षेत्र आपको उपलब्ध होंगा उसे सुन्दर एवं आकर्षक बनाने में तत्पर होंगे। साथ ही आधुनिक उपकरणों से भी घर को सुसज्जित करेंगे। आपका घर किसी अच्छी कालोनी में होगा तथा पड़ोसियों के साथ आपके अच्छे संबंध रहेंगे एवं एक दूसरे को यथोचित आदर एवं सम्मान प्रदान करेंगे। साथ ही उत्तम वाहन सुख अर्जित करने में भी जीवन में सफलता प्राप्त करेंगे।

आपकी माता जी मृदुस्वभाव की महिला होंगी तथा सभी लोग उनके व्यक्तित्व से प्रभावित होंगे। परिवार के सदस्यों पर उनका पूर्ण नियंत्रण होगा। आपके प्रति उनके मन में विशिष्ट वात्सल्य एवं अपनत्व का भाव होगा तथा समयानुसार आपको नैतिक एवं आर्थिक सहयोग प्रदान करती रहेंगी। आपका भी माता के प्रति श्रद्धा का भाव रहेगा तथा उनकी आज्ञापालन में तत्पर होंगे एवं सुख दुख में उनका पूर्ण ध्यान रखेंगे। इससे आप लोगों के आपसी संबधों में मधुरता रहेगी।

आप प्रारंभ से ही ज्ञानार्जन के प्रति रूचिशील रहेंगे तथा प्रारंभिक कक्षाओं से ही अच्छे अंक अर्जित करके परीक्षाओं में उतीर्ण होंगे। अपनी इसी लगनशीलता एवं बुद्धिमता के कारण स्नातक परीक्षा अच्छे अंको से उतीर्ण करेंगे। इससे आपका भविष्य उज्ज्वल होगा तथा मन में आत्म विशवास के भाव की भी वृद्धि होगी जिससे कार्य क्षेत्र संबंधी प्रतियोगिताओं में अच्छी सफलता अर्जित करेंगे। इस प्रकार शिक्षा की दृष्टि से यह स्थिति शुभ रहेगी। चन्द्रमा के चतुर्थ भाव में स्थिति के प्रभाव से आपको प्रारंभिक शिक्षा माता के द्वारा प्राप्त होगी।

चतुर्थ भाव में सिंह राशिस्थ चन्द्रमा के प्रभाव से जीवन में यदा कदा आप रक्त चाप संबंधी परेशानी का सामना कर सकते है। लेकिन इसका कोई विशेष दुष्प्रभाव नहीं होगा। अतः आपको युवावस्था से ही खान-पान पर ध्यान देना चाहिए तथा रक्त को प्रभावित करने वाली वस्तुओं का परहेज रखना चाहिए।

बुद्धि, सन्तान एवं प्रणय सम्बन्ध

आपके जन्म समय में पंचमभाव में कन्या राशि उदित हो रही थी। जिसका स्वामी बुध है। शनि भी नवमेश एवं दशमेश होकर मित्र राशि में पंचमभाव में स्थित है। शनि की यह स्थिति विद्या बुद्धि सन्तान एवं सम्मान के लिए अत्याधिक शुभ मानी जाती है। अतः इसके प्रभाव से आप एक बुद्धिमान व्यक्ति होंगे तथा समस्त कार्य कलापों पर आपकी बुद्धिमता की स्पष्ट छाप रहेगी जिससे लोग आपकी बुद्धिमता से प्रभावित होंगे तथा आपको यथायोग्य सम्मान प्रदान करेंगे। वैदिक धर्म एवं दर्शन शास्त्रों के प्रति आपकी रूचि होगी तथा अवसरानुकूल इन पर परिश्रम पूर्वक अध्ययन करके ज्ञानार्जन करेंगे। जिससे आप एक विद्वान के रूप में समाज के समक्ष स्वयं को स्थापित करने में समर्थ होंगे। ज्यौतिष एवं गणित के क्षेत्र में भी आप सफलता अर्जित करके समाज में सम्मान प्राप्त कर सकते है। इसके अतिरिक्त लेखन कार्य आपके लिए लाभदायक सिद्ध होग।

प्रेम प्रसंगों में आपकी कोई विशेष रूचि नहीं होगी तथा प्रेम प्रसंग आपके लिए आदर्श या मर्यादा का सूचक होगा। अतः आपके अधिक प्रेम प्रसंग नहीं होंगे तथा कोई हुआ भी तो वह आपके विवाह में परिवर्तित हो सकता है। आपका यह विवाह जीवन में सुख ऐश्वर्य एवं प्रसन्नता प्रदान करने वाला होगा।

नवमेश की पंचमभाव में स्थिति के प्रभाव से आपको विवाह के बाद यथोचित समय पर संतति की प्राप्ति होगी। आपकी सन्तति में कन्याओं की संख्या अधिक होगी। आपके सभी बच्चे सुन्दर, स्वस्थ, बुद्धिमान, गुणवान एवं पराक्रमी होंगे तथा अपने व्यवहार से अन्य सामाजिक जनो को भी प्रभावित एवं प्रसन्न रखने में सफल होंगे। जिससे सभी लोग उन्हें वांछित स्नेह प्रदान करेंगे। आपके प्रति उनके मन में सम्मान के भाव में वृद्धि होगी। अतः बच्चों पर आप गौरव की अनुभूति करेंगे। वे सभी माता पिता के आज्ञाकारी होंगे तथा अनुभूति पूर्ण श्रद्धा एवं सम्मान का भाव रखेंगे। सामाजिक महत्व के शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यो को माता पिता की सलाह से ही सम्पन्न करेंगे। इससे आपको मानसिक शान्ति एवं संतुष्टि की प्राप्ति होगी। इसके अतिरिक्त बच्चों की माता की अपेक्षा पिता से अधिक लगाव होगा तथा अपनी समस्याएं पिता से ही कहेंगे तथा आप भी मित्रवत् उनकी समस्याओं का समाधान करेंगे जिससे परस्पर सामंजस्य बना रहेगा।

अध्ययन के प्रति प्रारंभ से ही आपके बच्चों की पूर्ण रूचि होगी तथा अपनी योग्यता, बुद्धिमता एवं परिश्रम से वे शिक्षा के क्षेत्र में आशातीत सफलता अर्जित करके अपने उज्जवल भविष्य का निर्माण करेंगे। वे किसी उच्च एवं प्रशासनिक पद पर भी नियुक्त हो सकते है। इससे आपके मान सम्मान एवं प्रभाव में वृद्धि होगी। इसके अतिरिक्त बच्चे आपकी पूर्ण देखभाल एवं सेवा करेंगे तथा अपनी ओर से किसी भी प्रकार का कष्ट नहीं होने देंगे जिससे आप बच्चों से प्रसन्न एवं संतुष्ट रहेंगे।

रोग, शत्रु, सेवक एवं मामा

आपके जन्म समय में षष्ठ भाव में तुला राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी शुक्र है। अतः इसके प्रभाव से आप सामान्यतया स्वस्थ ही रहेंगे तथा किसी भी प्रकार के कष्ट को सहन करने की शक्ति आप में विद्यमान रहेंगी। आप यदा कदा बुखार या अन्य सामान्य रोगों से कष्ट प्राप्त कर सकते है लेकिन आपको अपने स्वास्थ्य का पूर्ण ध्यान रखना चाहिए क्योंकि आप में रोग अवरोधक तत्वों की न्यूनता होने से जब एक बार बीमार पड़ेगें तो इसमें ठीक होने में काफी समय लग जाएगा। इसके अतिरिक्त भावुकता में आपको वाहन आदि को भी सामान्य गति से चलाना चाहिए।

आपके शत्रु काफी होंगे तथा समय समय पर आपको नीचा दिखाने के लिए वे प्रयत्नशील रहेंगे क्योंकि वे आपकी खुशहाली के प्रति ईर्ष्या का भाव रखते हैं। साथ ही आपके मित्र, संबन्धी एवं पड़ौसी भी आपके ऐश्वर्य से ईर्ष्या करेंगे अतः ये भी समय समय पर शत्रुओं का कार्य करेंगे जो कि आपके अन्य प्रत्यक्ष शत्रुओं से अधिक प्रभावी होंगे। यद्यपि मुकद्दमे आदि में आपकी कोई रूचि नहीं रहेगी परन्तु धन संबन्धी मामलों में आप कोई मुकद्दमा दायर कर सकते हैं। इसमें आपका धन व्यय अधिक होगा परन्तु कुछ परिश्रम के बाद आपको इसमें सफलता मिल सकती है। आपके नौकर आपके लिए विश्वास पात्र नहीं रहेंगे तथा पारिवारिक गुप्त रहस्यों को वे अन्य लोगों को बताकर आपके सम्मान में न्यूनता लाएंगे। साथ ही उनकी चोरी करने की आदत से भी आपको आर्थिक हानि की संभावना रहेगी।

आप स्वच्छन्द प्रवृत्ति के व्यक्ति होंगे तथा अपनी रूचि के अनुसार ही कार्यो को सम्पन्न करेंगे। यद्यपि आपके पास प्रचुर मात्रा में धनागमन होता रहेगा लेकिन आपात्काल के लिए आप बचाव करने में असमर्थ रहेंगे तथा प्रौढ़ावस्था में आपको भाइयों या संबन्धियों के कारण आपको ऋृण के बोझ में दबना पड़ सकता है। इससे आपके सामाजिक सम्मान में न्यूनता होगी अतः ऐसी परिस्थितियों से सावधान रहना चाहिए। आपके मामा मामियों से संबन्ध विशेष अच्छे नहीं रहेंगे तथा उनसे सुख एवं सहयोग अल्प मात्रा में ही प्राप्त होगा। खान पान के प्रति भी आपको सतर्क रहना चाहिए अन्यथा वृद्धावस्था में आपको वायु, गुर्दे तथा प्रमेह संबन्धी रोगों से परेशानी हो सकती है। इसके अतिरिक्त आप एक धनवान व्यक्ति होंगे परन्तु समाज में आपके अच्छे कार्यो से भी लोगों से शत्रुता के भाव में वृद्धि होगी अतः सावधान रहें।

दम्पति, विवाह एवं साझेदार

आपके जन्म समय में सप्तम भाव में वृश्चिक राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी मंगल है सामान्यतया सप्तम भाव में जलतत्व युक्त वृश्चिक राशि की स्थिति से जातक का सहयोगी पित प्रकृति धनवान एवं अधिक व्ययशील होता है। परन्तु नैसर्गिक शुभ ग्रह एवं जलतत्व युक्त शुक्र के प्रभाव से जातक सुशील संगीत एवं कला प्रिय मधुर भाषी तथा आधुनिक विचारों से युक्त होता है।

अतः इसके प्रभाव से आपकी पत्नी सुशील स्वभाव से युक्त बुद्धिमान एवं गुणवती महिला होंगी तथा आधुनिकता के प्रति विशेष आकर्षित रहेंगी। उनमें चंचलता का भाव भी होगा एवं प्रवृति भ्रमण प्रिय होगी। सांसारिक कार्य कलापों में वह दक्ष होंगी। वह एक शिक्षित महिला होंगी तथा आधुनिक तथा पाश्चात्य शास्त्रों में विशेष रूचि रखेंगी। वह कर्तव्य परायण एवं मधुर बोलने वाली होंगी जिससे पारिवारिक एवं सामाजिक लोग उनसे प्रभावित रहेंगे।

आपकी पत्नी गौरवर्ण की सुंदर एवं आकर्षक महिला होंगी तथा उनका अदभुत सौन्दर्य दर्शनीय रहेगा उनका कद भी सामान्य होगा परन्तु शारीरिक संरचना दर्शनीय होगी एवं अंग प्रत्यंग सुडौल एवं पुष्ट रहेंगे। वृश्चिक राशि एवं शुक्र ग्रह में जल तत्व की प्रधानता के कारण उनमें स्थूलता भी आ सकती है अतः पहले से ही व्यायाम या योगादि द्वारा इसे नियंत्रित करना चाहिए। सौन्दर्य के प्रति वह हमेशा सतर्क रहेगी तथा सुंदर वस्तुओं संगीत एवं कला के प्रति समर्पित होंगी।

आपका विवाह विज्ञापन या किसी महिला संबधी के द्वारा सम्पन्न होगा। सप्तम भावस्थ शुक्र के प्रभाव से प्रेम विवाह की भी प्रबल संभावना रहती है। विवाह के बाद आप एक दूसरे के प्रति समर्पित रहेंगे तथा सुख दुख में पूर्ण सहयोग प्रदान करेंगे। अतः आपके संबधों में मधुरता रहेगी जिससे दाम्पत्य जीवन सुख एवं प्रसन्नता पूर्वक व्यतीत होगा ।

आपका विवाह किसी उच्च एवं प्रभावशाली परिवार में होगा तथा आर्थिक रूप से भी उनकी स्थिति सुदृढ़ होगी फलतः विवाह के समय आपको ससुराल से प्रचुर मात्रा में धन सम्पति की प्राप्ति होगी। सास ससुर से भी आपके संबधों में मधुरता रहेगी एवं उनको पूर्ण आदर तथा सम्मान प्रदान करेंगे। वे भी आपको पुत्रवत स्नेह देंगे तथा ससुराल से आर्थिक एवं नैतिक सहयोग भी अवसरानुकूल मिलता रहेगा।

सास ससुर के प्रति आपकी पत्नी सेवा एवं श्रद्धा का भाव रखेंगी तथा उनकी सुख सुविधा का ध्यान रखकर उन्हें अपनी ओर से किसी भी प्रकार का कष्ट नहीं होने देंगी। साथ ही अपने सदव्यवहार एवं मृदुवाणी से देवर एवं ननदों से भी यथोचित सम्मान एवं सहयोग प्राप्त करेंगी जिससे परिवार में सुख शांति बनी रहेगी।

व्यापार में साझेदारी के लिए स्थिति शुभ रहेगी एवं इससे आपके लाभ एवं उन्नति मार्ग प्रशस्त होंगे।

दहेज, बीमा आयु एवं दुर्घटना

आपके जन्म समय में अष्टम भाव में धनु राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी बृहस्पति है। इसके प्रभाव से आपकी ज्यौतिष एवं तंत्र मंत्र आदि के प्रति श्रद्धा रहेगी तथा यत्न पूर्वक इसके ज्ञानार्जन करने में भी समर्थ रहेंगे। साथ ही मनोविज्ञान के क्षेत्र में भी कुछ कार्य करने के लिए तत्पर होंगे। आप के पास पैतृक सम्पत्ति रहेगी लेकिन वह अधिक नहीं होगी साथ ही उसका उपयोग भी आप अच्छी तरह करने में असमर्थ से रहेंगे। आपके संबन्धी भी आपकी जमीन जायदाद आदि पर अपना दावा कर सकते है जिससे अनावश्यक तर्क वितर्कों के साथ वातावरण अप्रसन्नता से युक्त रहेगा। इसके प्रभाव से पारिवारिक कलह भी हो सकता है। अतः यह जायदाद सन्तुष्टि की जगह असन्तुष्टि का भाव ही उत्पन्न करेगी।

विवाह के समय दहेज आदि आपको मध्यम रूप से ही प्राप्त होगा तथा ससुराल पक्ष से किसी निश्चित रकम के बारे में कोई विवाद भी हो सकता है जिससे दाम्पत्य जीवन की मधुरता प्रभावित हो सकती है। आपको न्यूनाधिक रूप से बीमा अवश्य कराना चाहिए चाहे वह किसी का भी हो इससे आपको न्यूनाधिक लाभ अवश्य प्राप्त होगा यद्यपि जीवन में आपको यहां चोरी आदि की संभावना नहीं है तथापि सावधान अवश्य रहना चाहिए। आप स्वपरिश्रम एवं पराक्रम से ही इच्छित धनार्जन करेंगे तथा विशिष्ट धन लाभ के भाव की अल्पता रहेगी। आपकी आयु उत्तम रहेगी तथा जीवन में आप स्वस्थ रहकर अपने समस्त शुभ एवं महत्वपूर्ण सांसारिक कार्यो को सम्पन्न करेंगे परन्तु वृद्धावस्था में यदा कदा आप शारीरिक अस्वस्थता प्राप्त करेंगे लेकिन इसका विशेष दुष्प्रभाव नहीं रहेगा।

सौभाग्य, प्रसिद्धि, पूजा, उच्चशिक्षा एवं लम्बी यात्राएं

आपके जन्म समय में नवम भाव में मकर राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी शनि है। अतः इसके प्रभाव से यद्यपि आप धर्म तथा धार्मिक कार्य कलापों का विरोध नहीं करेंगे परंतु स्वयं की इसमें कोई विशेष रूचि नहीं रहेगी। साथ ही इच्छा पूर्वक किसी भी धार्मिक ग्रंथ के अध्ययन के इच्छुक भी नहीं रहेंगे लेकिन ईश्वर की सत्ता में आपका पूर्ण विश्वास रहेगा तथा इसी परिपेक्ष्य में आप व्रतादि का भी आचरण करेंगे। आप दैनिक पूजा पाठ भी सम्पन्न करेंगे या इस उदद्शेय की पूर्ति के लिए प्रतिदिन किसी मंदिर या अन्य पूजास्थल में जा सकते है। आप धार्मिक कार्य कलापों में विशेष व्यय करना उचित नहीं समझते। इसके साथ ही अन्य विषयों में उच्चशिक्षा अर्जित करने के लिए विशेष उत्सुक रहेंगे लेकिन धर्म एवं भाग्य को आप अपनी विचार धारा में सम्मिलित कम ही करेंगे। आपकी अर्न्तप्रज्ञा विकसित रहेगी तथा शरीर में आत्मा को स्वीकार करेंगे।

आपके विचार में जीवन कर्म प्रधान होना चाहिए तथा भाग्य इसमें सहायक की भूमिका निभाता है। अतः अन्य जनों को हमेशा कार्य करने की शिक्षा देंगे तथा भाग्य पर अल्प विश्वास करने के लिए कहेंगे लेकिन प्रौढ़ावस्था में आप स्वयं कर्म की अपेक्षा भाग्य की महत्ता को अधिक मात्रा में अनुभव करेंगे तथा आपके विचार में भाग्य की प्रबलता के बिना कर्म का कोई विशेष महत्व नहीं है। आपकी लम्बी दूरी की यात्राएं अल्प मात्रा में होंगी तथा इनसे विशेष लाभ भी नहीं होगा लेकिन समाज में सम्मानीय तथा ख्याति प्राप्त व्यक्ति होंगे। आप अपने पूर्व जन्म के पुण्यों के फल से मध्यमायु में शुभ फल प्राप्त करेंगे तथा इस समय सुखी रहेंगे लेकिन वृद्धावस्था में किंचित परेशानी हो सकती है। साथ ही पौत्रादि का सुख भी मध्यम ही रहेगा।

पिता, व्यवसाय एवं सामाजिक स्तर

आपके जन्म समय में दशमभाव में कुम्भ राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी शनि है। कुम्भ राशि वायुतत्व युक्त है। अतः इनके प्रभाव से आपका कार्य क्षेत्र निरंतर उन्नतिशील रहेगा एवं किसी भी प्रकार की अनावश्यक समस्याओं एवं व्यवधानों का सामना नहीं करना पड़ेगा। साथ ही इच्छित उन्नति एवं सफलता भी मिलती रहेगी।

दशम भाव में कुंभ राशि का स्वामी शनि है। अतः इसके शुभ प्रभाव से आपकी आजीविका उत्तम रहेगी। आपके लिए वायुसेना, एयर लाइंस, खनिज एवं खान विभाग, पेट्रोलियम उद्योगों में भागीदारी, फैक्टरी कर्मचारी, संदेशवाहक तथा राजनीति के क्षेत्र में विशिष्ट सफलता मिल सकती है। अतः यदि आप अपनी आजीविका इन्हीं क्षेत्रों में प्रारंभ करें तो इनमें आपको वांछित उन्नति एवं सफलता प्राप्त होगी तथा उन्नति के शिखर पर पहुँचने में आप समर्थ होंगे। साथ ही राजनीति आपके लिए काफी अनुकूल होगी तथा इस क्षेत्र में अल्प समय में ही आप काफी उन्नति करने में समर्थ हो सकते है। अतः आजीविका में वांछित सफलता एवं नवीन आयाम स्थापित करने के लिए आपको उपरोक्त क्षेत्रों या विभागों में ही अपना कार्य क्षेत्र निश्चित करना चाहिए।

व्यापारिक क्षेत्र में लोहे के व्यापार से विशिष्ट लाभ प्राप्त करेंगे। इसके साथ ही भारी उद्योग, फैक्टरी, पेट्रोल पम्प, शराब का व्यापार प्रेस, खेती, बागवानी, आदि के कार्यो से प्रचुर मात्रा में धनार्जन करने में समर्थ होंगे तथा जीवन में विशिष्ट उन्नति तथा लाभ अर्जित करेंगे। अतः आपको चाहिए कि यत्नपूर्वक इन्हीं क्षेत्रों में अपने व्यापार का शुभारम्भ करें।

योगकारक ग्रह की राशि के प्रभाव से जीवन में आप उच्च मान सम्मान एवं पद अर्जित करने में समर्थ होंगे। समाज में आपको प्रचुर मात्रा में यश तथा प्रतिष्ठा की भी प्राप्ति होगी। आपका सम्पर्क अधिकारी एवं राजनैतिक नेताओं से बने रहेंगे जिससे सर्वत्र प्रभावशाली माने जाएंगे। साथ ही सामाजिक या सार्वजनिक संस्थाओं में भी आप उच्चपदाधिकारी के रूप में कार्यरत होंगे इनसे आपकी सामाजिक मान प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी तथा यश एवं प्रसिद्धि भी मिलेगी तथा आपका सामाजिक स्तर भी उच्च होगा।

आपके पिता तेजस्वी बुद्धिमान योग्य एवं पराक्रमी पुरूष होंगे तथा उनका व्यक्तित्व भी आकर्षक होगा फलतः अन्य जन उनके कार्यकलापों से प्रभावित रहेंगे। आपके प्रति उनका विशेष स्नेह एवं वात्सल्य का भाव होगा तथा शिक्षा दीक्षा का समुचित ध्यान रखेंगे साथ ही आपके कार्यक्षेत्र में उन्नति में उनका विशेष योगदान रहेगा एवं उनके प्रभाव से भी आपको प्रचुर मात्रा में लाभ उन्नति एवं प्रतिष्ठा की प्राप्ति होगी। आपकी भी उनके प्रति पूर्ण श्रद्धा एवं सम्मान की भावना होगी तथा उनकी आज्ञा पालन करना अपना प्रिय कर्तव्य समझेंगे। इसके अतिरिक्त परस्पर सिद्धांतों एवं वैचारिक एकता होने के कारण संबधों में भी मधुरता रहेगी।

लाभ, मित्र, समाज, ज्येष्ठ भ्राता एवं आकांक्षाएं

आपके जन्म समय में एकादश भाव में मीन राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी बृहस्पति है। अतः इसके प्रभाव से आप एक महत्वाकांक्षी व्यक्ति होंगे तथा अपनी महत्वाकांक्षाओं तथा इच्छाओं की पूर्ति के लिए ईमानदारी तथा सत्य का अनुपालन करेंगे तथा परिश्रम पूर्वक उनको पूर्ण करने में समर्थ रहेंगे। इसके साथ ही आप जब भी जिस वस्तु की कामना करते है आपको उसकी प्राप्ति भी हो सकती है। आप शिक्षक, बैंक अधिकारी, वकील कम्पनी या सरकारी अधिकारी के रूप में व्यवसायिक सफलता अर्जित कर सकते है या इन लोगों से आपको समय समय पर विशिष्ट लाभ की प्राप्ति हो सकती है। इसके प्रभाव से आप मित्रों के संबध में भाग्यशाली रहेंगे तथा उनसे आपको समय समय पर इच्छित लाभ एवं सहयोग प्राप्त होता रहेगा। मित्रों से आप को जीवन में उचित प्रोत्साहन भी प्राप्त होगा जिससे आपकी उन्नति होगी तथा वे आपसे वयस्क एवं अनुभवी होंगे।

आपका सामाजिक स्तर उच्च रहेगा तथा बड़े बड़े अधिकारी मंत्री नेता या महत्वपूर्ण व्यक्तियों से आपका मेल जोल या संबध रहेंगे जिससे समाज में आपको पूर्ण आदर तथा सम्मान की प्राप्ति होगी। साथ ही महत्वपूर्ण लोगों के प्रभाव से आप उचित लाभ एवं ख्याति प्राप्त करेंगे। बड़े भाई बहिनों से आपके संबध सामान्यतया मधुर रहेंगे आवश्यकतानुसार उनका सहयोग भी मिलता रहेगा। आपके आय के साधन मुख्य कार्य के अतिरिक्त अन्य भी हो सकते है जिससे की आपका धनार्जन अच्छा रहेगा साथ ही जीवन में आप समयानुसार कोई विशिष्ट सम्मान भी अर्जित करने में समर्थ हो सकते है। इसके अतिरिक्त बाएं कान के दर्द से यदा कदा परेशान हो सकते है परन्तु सामान्य जीवन आनन्द पूर्वक व्यतीत करेंगे।

हानि, बन्धन, कर्ज, आवास परिवर्तन एवं मोक्ष

आपके जन्म समय में द्वादश भाव में मेष राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी मंगल है। अतः इसके प्रभाव से आप धन का सदुपयोग करने वाले व्यक्ति होंगे तथा अवसरानुकूल बचत भी करेंगे। आप समान्यतया अनावश्यक व्यय कम ही करेंगे। साथ ही धैर्य का भाव भी आप में विद्यमान रहेगा। आप धन की कीमत समझेंगे तथा बुद्धिमता पूर्वक इसका उपयोग करेंगे लेकिन आपको अपना पूंजीनिवेश सामान्य कंपनियों या अन्य स्थानों में नहीं करना चाहिए।

आपकी जीवन में उन्नति शनैः शनैः सम्पन्न होगी क्योंकि आप किसी कार्य को अत्यंत ही सोच समझकर धैर्य पूर्वक सम्पन्न करते हैं तथा आर्थिक स्थिति भी युवावस्था के बाद ही विशेष अनुकूल हो सकती है। अतः आपको आर्थिक क्षेत्र में किसी नाटकीय परिवर्तन की अपेक्षा नहीं करनी चाहिए। इसके अतिरिक्त आप लम्बी अवधि के निवेशों से लाभान्वित हो सकते है।

आपका सामान्य व्यय परोपकार संबधी कार्यो पर होगा तथापि यदा कदा कोई अनावश्यक व्यय भी हो सकता है। अतः इससे आपको सावधानी रखनी चाहिए। यात्राओं से आपको आनन्द की अनुभूति होगी तथा समय समय पर इनसे लाभ भी होता रहेगा। आप जीवन में विदेश यात्रा अवश्य करेंगे। यह यात्रा आपकी धर्म या धार्मिक कार्यो से संबधित होगी अथवा किसी अन्य व्यक्ति या संबधी के सहयोग से आपको यह सुअवसर प्राप्त होगा। यह चाहे यात्रा किसी भी संदर्भ में हो आपके लिए आर्थिक एवं अन्य दृष्टियों से लाभदायक रहेगी तथा विभिन्न दर्शनीय स्थानों की सैर करने का भी आपको अवसर प्राप्त होगा। इसके अतिरिक्त यदा कदा आपको बायीं आंख में कोई परेशानी हो सकती है। अतः इसका उचित ध्यान रखना चाहिए।

अंक जीवन ग्राफ

आपका मूलांक एवं भाग्यांक वर्ष के अंकों से एवं आयु के अंको से जो संबंध बनाते हैं वे एक ग्राफ के रूप में नीचे दिए गए हैं। इस ग्राफ द्वारा आप यह साफ साफ जान सकते हैं कि कौन सा आयु का वर्ष आपके लिए लाभकारी हो सकता है या कौन सा वर्ष अनिष्टकारी हो सकता है। इस ग्राफ को बनाने के लिए मूलांक एवं भाग्यांक के आयु वर्ष एवं उनके अलग अलग अंकों से संबंध को लिया गया है। यदि ग्राफ में 60 से ऊपर नंबर आ रहे हैं तो वह वर्ष आपके लिए महत्वपूर्ण हो सकता है एवं जिसे 40 से कम नंबर प्राप्त हुए हैं वह वर्ष आपको कुछ कष्टदायक हो सकता है।

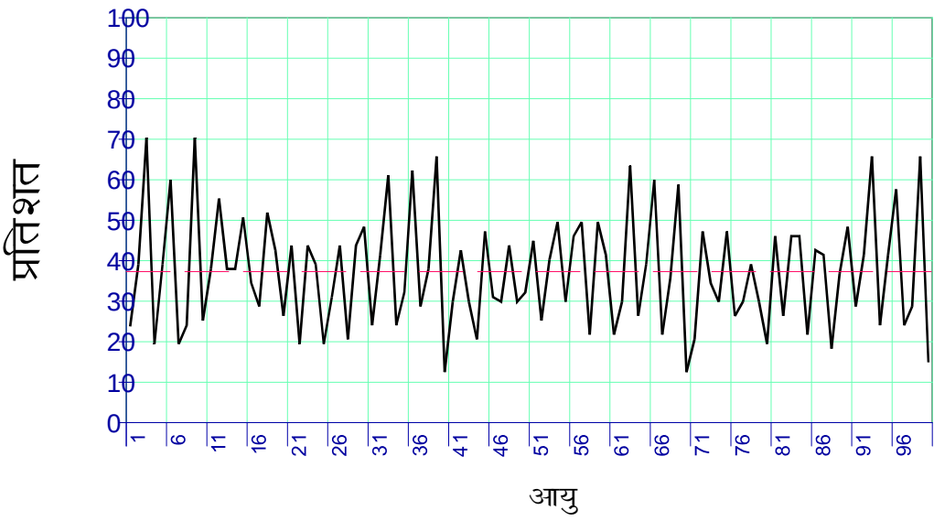

महत्वपूर्ण वर्ष : 1992, 2001, 2010, 2019, 2028, 2037, 2046, 2055

शुभ आयु : 11, 20, 29, 38, 47, 56, 65, 74

|| एस्ट्रोग्राफ ||

एस्ट्रोग्राफ, जीवन के किसी भी पहलू की ग्राफ द्वारा प्रस्तुति है। इससे स्वास्थ्य, आर्थिक, बुद्धि, प्रेम या अन्य किसी भी क्षेत्र में, एक समय के दौरान, होने वाली घटनाओं में रूचि रखने वालों को जानकारी मिलती है। एस्ट्रोग्राफ हमें सही रूप जानने और उन्हें आसानी से समझने में सहायक होते है।

अगले पृष्टों में आपके जीवन के दो महत्वपूर्ण पहलू –स्वास्थ्य तथा धन– एस्ट्रोग्राफ द्वारा दिखाये गये हैं। ये एस्ट्रोग्राफ 100 मापक्रम के अनुसार हैं।। यदि आपका एस्ट्रोग्राफ 50 से अधिक अंक दिखाता है तो वह शुभ है। 65 से ऊपर बहुत अच्छा होता है और 80 से ऊपर अति उत्तम होता है। 50 से नीचे सामान्य होता है, 35 से नीचे बुरा तथा 20 से नीचे बहुत बुरा माना जाना चाहिए।

0-20	निकृष्ट	50-65	श्रेष्ठ
20-35	नेष्ट	65-80	उत्तम
35-50	सामान्य	80-100	अत्युत्तम

स्वास्थ्य एस्ट्रोग्राफ

फरवरी

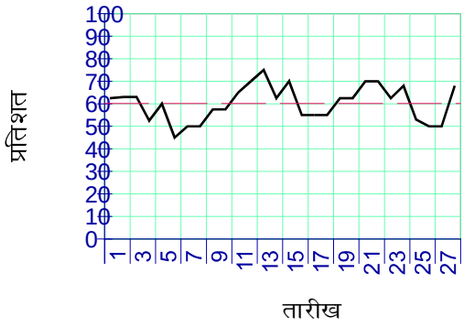

मार्च

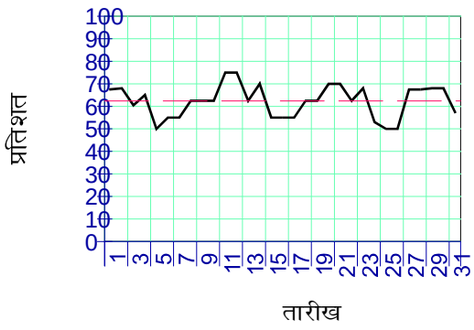

अप्रैल

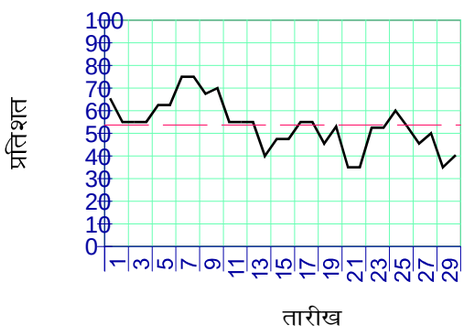

आर्थिक एस्ट्रोग्राफ

फरवरी

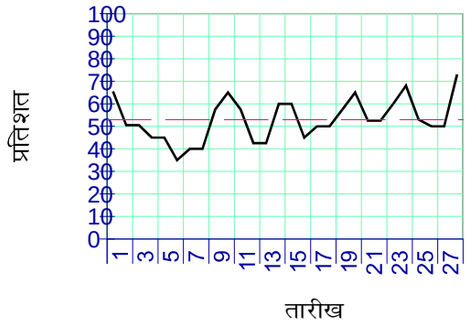

मार्च

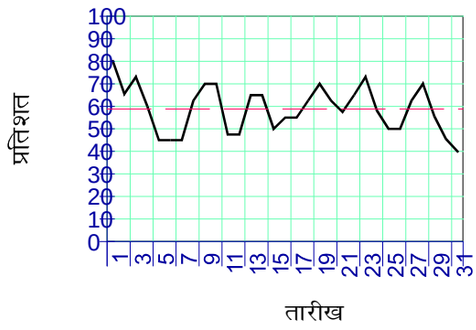

अप्रैल

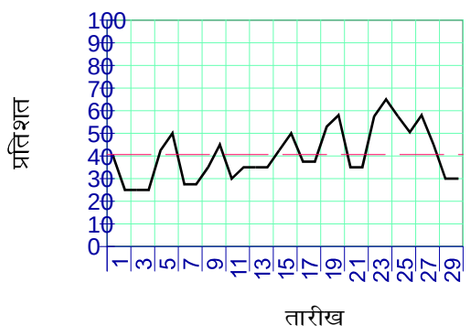

स्वास्थ्य एस्ट्रोग्राफ

मई

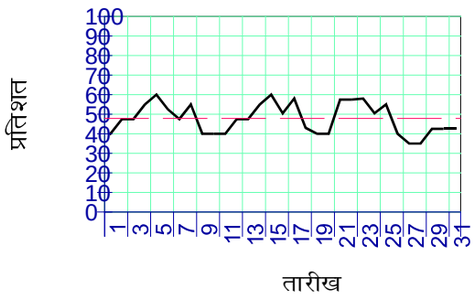

जून

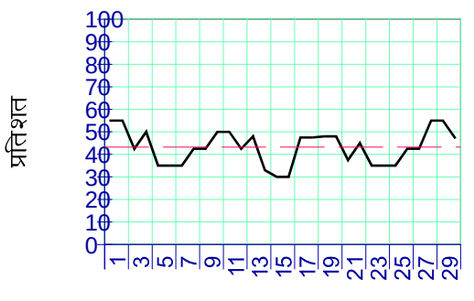

जुलाई

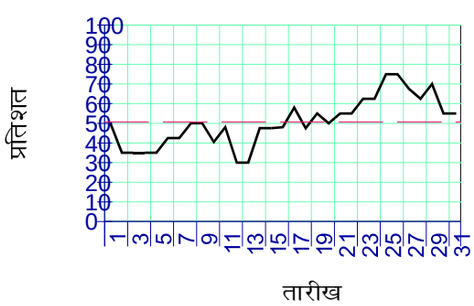

आर्थिक एस्ट्रोग्राफ

मई

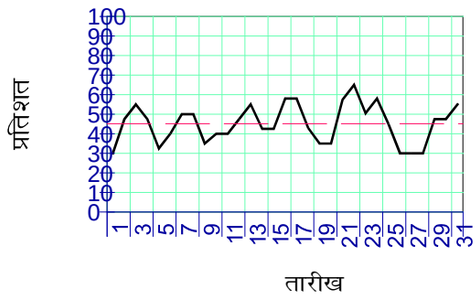

जून

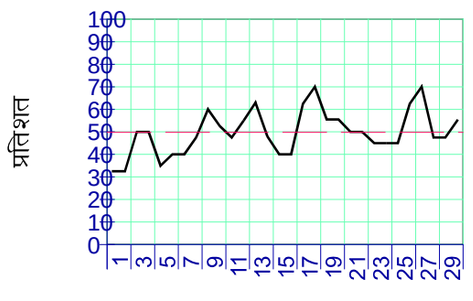

जुलाई

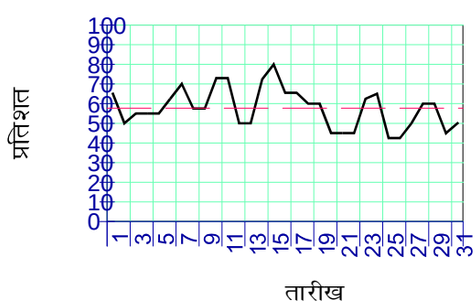

स्वास्थ्य एस्ट्रोग्राफ

अगस्त

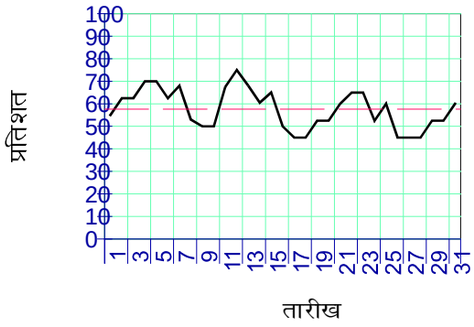

सितम्बर

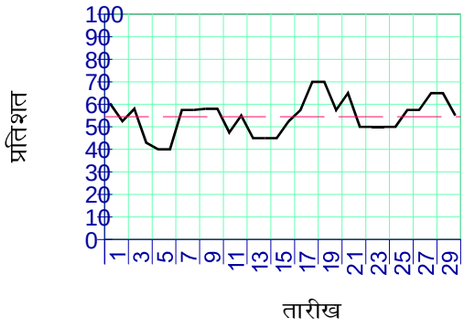

अक्तूबर

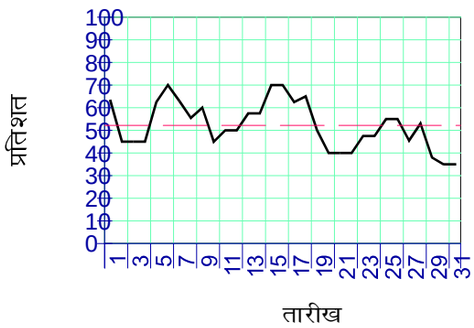

आर्थिक एस्ट्रोग्राफ

अगस्त

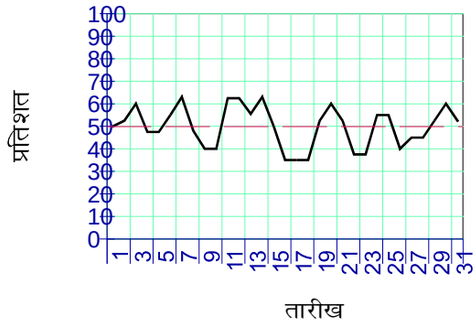

सितम्बर

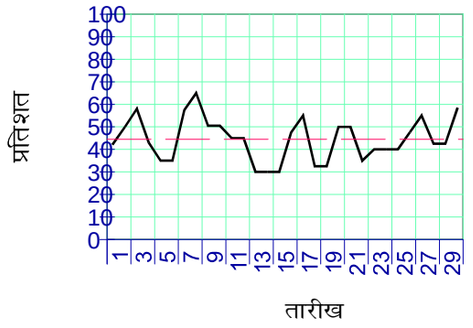

अक्तूबर

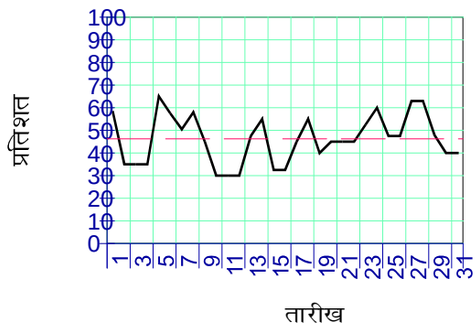

स्वास्थ्य एस्ट्रोग्राफ

नवम्बर

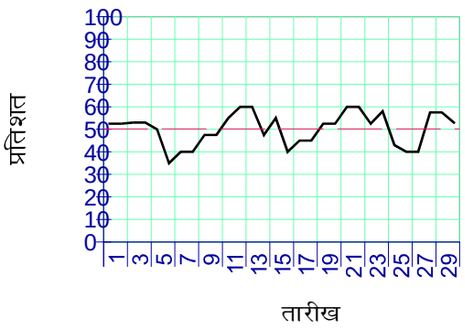

दिसम्बर

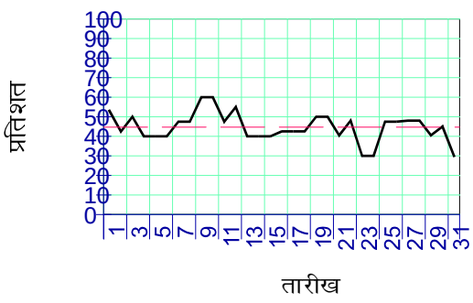

जनवरी

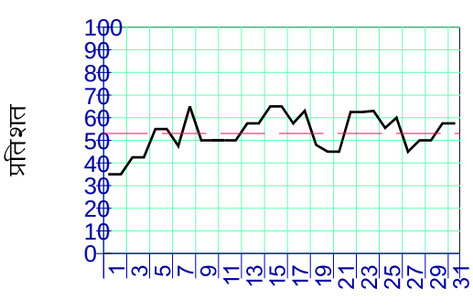

आर्थिक एस्ट्रोग्राफ

नवम्बर

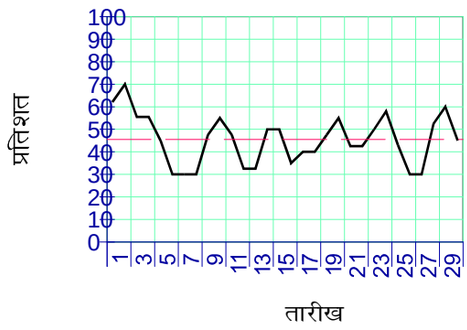

दिसम्बर

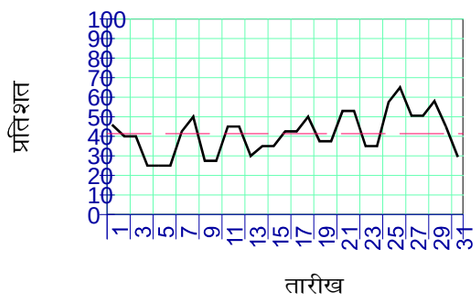

जनवरी

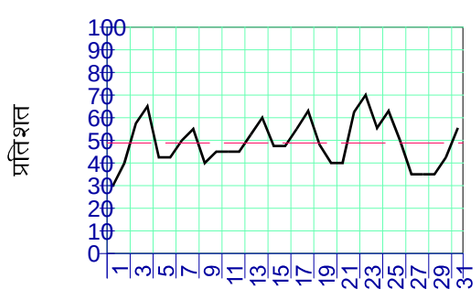

फलादेश - 2010

शारीरिक स्वास्थ्य की दृष्टि से यह वर्ष आपके लिए सामान्यतया अच्छा ही रहेगा परन्तु पारिवारिक सुख शान्ति एवं समृद्धि के लिए समय मध्यम रहेगा। व्यापारिक तथा कार्य क्षेत्र में आप परिश्रम पूर्वक उन्नति एवं सफलता अर्जित करने में समर्थ रहेंगे आर्थिक दृष्टि से भी आपकी स्थिति सुदृढ़ रहेगी तथा प्रचुर मात्रा में धन एवं लाभ प्राप्त करने में सफल रहेंगे। इस वर्ष के पूर्वार्द्ध में आपकी कोई लम्बी दूरी या विदेश संबधी यात्रा होगी साथ ही इस समय व्यय भी अधिक होगा जिससे आप मानसिक रूप से परेशानी की अनुभूति करेंगे।

इस वर्ष में आपका शारीरिक स्वास्थ्य सामान्यतया अच्छा ही रहेगा। इस समय आपके सभी शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्य उत्साह तथा परिश्रम से सम्पन्न होंगे। एवं उनमें आपको अधिकांश में सफलता भी प्राप्त होगी परन्तु जून से नवम्बर के मध्य बृहस्पति की अष्टम भाव में स्थिति होने के कारण आप उदर संबधी कष्ट की अनुभूति कर सकते है लेकिन इसका कोई विशेष दुष्प्रभाव नहीं होगा तथा आपका सामान्य समय सुख एवं प्रसन्नता पूर्वक व्यतीत होगा।

पारिवारिक सुख शान्ति एवं समृद्धि के लिए यह वर्ष अच्छा नहीं रहेगा इस समय परिवार में अनावश्यक तनाव तथा कलह का वातावरण रहेगा तथा पारिवारिक जनों के मध्य परस्पर सहयोग की भावना का अभाव रहेगा जिससे संबधों में भी मधुरता की अल्पता स्पष्ट रूप से दृष्टिगोचर होगी। यह सब शनि की द्वितीय भाव में स्थिति के प्रभाव से होगा। माता पिता के स्वास्थ्य के लिए समय अच्छा रहेगा तथा शारीरिक एवं मानसिक रूप से वे प्रसन्न रहेंगे लेकिन संतति पक्ष के लिए यह समय प्रतिकूल रहेगा अतः स्वास्थ्य संबधी परेशानी बनी रहेगी तथा उनके सुख एवं सहयोग में भी अल्पता रहेगी। परन्तु स्त्री के सुख एवं स्वास्थ्य के लिए वर्ष अच्छा रहेगा तथा शारीरिक एवं मानसिक रूप से वे प्रसन्न रहेंगी अतः उनसे आपको पूर्ण सुख एवं सहयोग की प्राप्ति होगी तथा दाम्पत्य संबधों में भी मधुरता रहेगी।

व्यापारिक तथा कार्य क्षेत्र में उन्नति एवं सफलता के लिए यह वर्ष सामान्यतया शुभ ही रहेगा इस समय फरवरी से मई तक दिसम्बर तक बृहस्पति की स्थिति सप्तम भाव में रहेगी अतः इसके प्रभाव से आपकी आर्थिक स्थिति अच्छी रहेगी तथा व्यापार या कार्य क्षेत्र में आप परिश्रम पूर्वक उन्नतिशील रहेंगे। राशि से एकादश भावस्थ केतु के प्रभाव से आपके सौभाग्य में वृद्धि होगी तथा व्यापार में आशातीत उन्नति तथा सफलता प्राप्त करने में समर्थ रहेंगे। साथ ही नौकरी या राजनीति के क्षेत्र में आपको किसी महत्वपूर्ण पद की प्राप्ति होगी जिससे समाज में आपके मान प्रतिष्ठा तथा यश में अभिवृद्धि होगी तथा सभी लोग आपका हार्दि सम्मान करेंगे इसके अतिरिक्त आपके आर्थिक क्षेत्र में भी वृद्धि होगी तथा प्रचुर मात्रा में आप धन एवं लाभ अर्जित करने में समर्थ रहेंगे।

इस वर्ष में जनवरी से अप्रैल के मध्य आपकी कोई लम्बी दूरी या विदेश की यात्रा

सम्पन्न होगी साथ ही इस समय व्यय भी अधिक होगा तथा यात्रा के मध्य आपको कोई कष्ट भी होगा अतः मानसिक रूप से परेशान रहेंगे परन्तु उसके बाद का समय अच्छा रहेगा तथा व्यय भी उचित एवं अनुकूल मात्रा में ही होगा।

चन्द्र की महादशा में मंगल का अंतर ११/०३/२०१० को समाप्त होगा। उसके बाद राहु का अंतर प्रारंभ होगा। मंगल द्वादश भाव में मेष राशि में स्थित हैं जबकि राहु तृतीय भाव में कर्क राशि में स्थित हैं।

यह समय आपके लिए सामान्यतया अच्छा रहेगा। इस समय अल्प परिश्रम से ही आपके शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्य सम्पन्न होंगे तथा अपने लक्ष्यों की प्राप्ति में समर्थ रहेंगे व्यापारिक क्षेत्र में भी लाभ तथा उन्नति के मार्ग प्रशस्त रहेंगे। आर्थिक दृष्टि से स्थिति में सुधार होगा तथा आय स्रोतों में भी वृद्धि होगी यदि नौकरी में है तो पदोन्नति की संभावना बनेगी। पारिवारिक सुख शांति तथा समृद्धि अच्छी रहेगी तथा सभी लोग आपस में प्रेम पूर्वक रहेंगे शत्रु एवं प्रतिद्वन्दी भी इस समय आपसे पराजित रहेंगे साथ ही यदा कदा सांसारिक व्यय भी अधिक होगा लेकिन इसका कोई दुष्प्रभाव नहीं होगा इसके अतिरिक्त दूर समीप की यात्राओं की भी संभावना रहेगी लेकिन जोखिम के कार्यों से आपको इस समय दूर ही रहना चाहिए।

यह समय आपके लिए शुभ एवं महत्वपूर्ण रहेगा इस समय आपमें प्रबल साहस एवं आत्मविश्वास का भाव उत्पन्न होगा जिससे आप शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्य सम्पन्न करने में सफल रहेंगे साथ ही प्रभावशाली लोगों से सम्पर्क स्थापित होगा जिनसे भविष्य में वांछित लाभ एवं सहयोग प्राप्त होगा आर्थिक दृष्टि से स्थिति में सुदृढ़ता रहेगी तथा प्रचुर मात्रा में धनार्जन होगा। एवं आयसस्रोतो में भी वृद्धि होगी व्यापार के लिए समय अच्छा रहेगा तथा लाभमार्ग प्रशस्त रहेंगे। यदि नौकरी में है तो पदोन्नति के अवसर मिलेंगे तथा अधिकारी वर्ग से सम्बंधों में मधुरता रहेगी इसके अतिरिक्त कुछ लाभदायक दूर समीप की यात्राएं भी सम्पन्न होंगी जिनसे लाभ एवं सम्मान प्राप्त होगा साथ ही शत्रुवर्ग आपका विरोध करने में समर्थ रहेंगे।

फलादेश - 2011

इस वर्ष में गोचरवश बृहस्पति नवम भाव में रहेगी। अतः इसके प्रभाव से यह वर्ष आपके लिए महत्वपूर्ण रहेगा। इस समय आपके मन में धर्म के प्रति श्रद्धा उत्पन्न होगी तथा अन्य जनों की भलाई के लिए भी आप कार्य करते रहेंगे। शारीरिक एवं मानसिक रूप से आप स्वस्थ तथा प्रसन्नता की अनुभूति करेंगे। इस समय आपके सभी रुके हुए कार्य पूर्ण होंगे तथा व्यापार आदि में किसी नवीन योजना का शुभारम्भ करेंगे। नौकरी या राजनीति में आपकी पदोन्नति की प्रबल संभावना रहेगी। आर्थिक दृष्टि से भी वर्ष सामान्य रहेगा एवं आवश्यक मात्रा में धन एवं लाभ की प्राप्ति होती रहेगी। परन्तु आय गोचरफल एवं दशाफल इस समय प्रतिकूल रहेंगे।अतः उपर्युक्त शुभ फलों में यदा कदा आपको अल्पता कीभी अनुभूति करेंगे। तथापि परिश्रम एवं संघर्ष से आप को शुभ फलों की अधिक मात्रा में प्राप्ति हो सकती है।

शनि की स्थिति गोचर वश इस वर्ष द्वितीय भाव में रहेगी। अतः इसके प्रभाव से पारिवारिक सुख शान्ति तथा समृद्धि मध्यम रहेगी तथा यदा कदा परस्पर तनाव एवं मतभेद रहेंगे। साथ ही सहयोग के भाव की भी अल्पता रहेगी। इस समय आपकी मानसिक स्थिति भी विशेष अच्छी नहीं रहेगी तथापि अपने शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों को आप पराक्रम एवं परिश्रम पूर्वक सम्पन्न करने में तत्पर रहेंगे तथा इनमें आपको न्यूनाधिक सफलता समय समय पर मिलती रहेगी। लेकिन शत्रु या विपक्षी इस समय आपके लिए समस्याएं उत्पन्न करेंगे फलतः व्यापार या नौकरी के क्षेत्र में आपको उन्नति मार्ग में व्यवधानों का सामना करना पड़ेगा। साथ ही इस समय धनार्जन भी आवश्यक मात्रा में ही होगा।

इस वर्ष में गोचर तथा अन्य दशाफल भी आपके लिए अनुकूल नहीं रहेंगे साथ ही शनि की साढ़े साती की अन्तिम दशा भी रहेगी जिससे आपको पारिवारिक सामाजिक व्यापारिक एवं नौकरी तथा राजनीति आदि में अनावश्यक बाधाओं का सामना करना पड़ेगा। परन्तु अपने परिश्रम एवं संघर्ष से आप न्यूनाधिक मात्रा में लाभ एवं सुख प्राप्त करने में समर्थ रहेंगे। साथ ही शनि के अशुभ प्रभाव को कम करने के लिए आपको नियमित रूप से शनि का पूजन तथा दान करना चाहिए एवं शनिवार को ही बाएं हाथ की मध्यमा अंगुली में नीलम या लोहे की अंगूठी धारण करनी चाहिए। इससे अशुभ फलों में न्यूनता होगी ।

इस वर्ष में गोचरवश राहु की स्थिति चतुर्थ तथा केतु की स्थिति दशम भाव में रहेगी। अतः यह वर्ष आपके लिए सामान्य ही समझा जाएगा। इस वर्ष आपका स्वास्थ्य मध्यम रहेगा। मन से भी आप प्रसन्न तथा सन्तुष्ट रहेंगे तथा परिश्रमपूर्वक अपने कार्यों को सम्पन्न करेंगे। इस वर्ष में आप जमीन जायदाद सम्बन्धी क्रय विक्रय भी कर सकते हैं या वाहनादि के प्राप्ति की संभावना रहेगी । आर्थिक स्थिति इस समय आपकी सामान्य रहेगी तथा मात्रा में धन एवं लाभ प्राप्त होता रहेगा। कार्यक्षेत्र में भी आप इस वर्ष परिश्रमपूर्वक उन्नतिशील रहेंगे। लेकिन माता पिता का स्वास्थ्य इस समय मध्यम रहेगा तथा समय समय पर वे शारीरिक एवं मानसिक कष्ट की अनुभूति करेंगे। इसके साथ ही इस वर्ष में आपकी दूर समीप की यात्राएँ भी सम्पन्न होंगी परन्तु अन्य गोचरफल तथा दशा फल इस समय अशुभ रहेंगे।अतः उपर्युक्त शुभ फलों मैं न्यूनता होगी। अतः शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों की सिद्धि के लिए अधिक परिश्रम करना पड़ेगा।

चन्द्र की महादशा में राहु का अंतर १०/०६/२०११ को समाप्त होगा। उसके

बाद गुरु का अंतर प्रारंभ होगा। राहु तृतीय भाव में कर्क राशि में स्थित हैं जबकि गुरु पंचम् भाव में कन्या राशि में स्थित हैं।

यह समय आपके लिए विशेष अच्छा नहीं रहेगा इस समय आपमें साहस तथा आत्मविश्वास की कमी रहेगी जिससे शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्य अल्प मात्रा में सम्पन्न होंगे आर्थिक दृष्टि से स्थिति में अस्थिरता रहेगी तथा आयस्रोतो में कमी के कारण आपको आर्थिक परेशानी का भी सामना करना पड़ सकता है। व्यापार के लिए समय अच्छा नहीं रहेगा तथा इस समय आपको अनावश्यक समस्याओं का सामना करना पड़ेगा। तथा लाभ मार्ग भी अवरुद्ध रहेंगे नौकरी में पदोन्नति सम्बंधी व्यवधान उत्पन्न होंगे तथा अधिकारी वर्ग से सम्बंधों में कटुता रहेगी जिससे वे आपसे अप्रसन्न रहेंगे साथ ही अनिच्छित तथा व्यर्थ की यात्राएं भी सम्पन्न होंगी जिससे मानसिक परेशानी होगी लेकिन शत्रु से आपको कोई समस्या नहीं होगी तथा उनको प्रभावित करने में आप समर्थ रहेंगे।

यह समय आपके लिए विशेष अच्छा नहीं रहेगा इस समय सक्रियता के भाव की आप में न्यूनता रहेगी शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में वांछित सफलता प्राप्त नहीं होगी साथ ही व्यापार आदि के लिए भी समय प्रतिकूल रहेगा तथा अन्यत्र मार्ग अवरुद्ध रहेंगे जिससे हानि की संभावना बनेगी। आर्थिक स्थिति में भी अस्थिरता रहेगी एवं आय स्रोतों में कमी के कारण यदा कदा आर्थिक परेशानी का भी सामना करना पड़ेगा पारिवारिक वातावरण में भी अशांति रहेगी तथा सदस्यों का परस्पर असहयोग का भाव रहेगा अविवहितों के विवाह में इस समय रूकावटें आएंगी। मित्रवर्ग से भी वांछित सहयोग नहीं मिलेगा तथा आपस में अविश्वास का भाव रहेगा। इसके अतिरिक्त सामाजिक मान प्रतिष्ठा में भी न्यूनता रहेगी तथा शत्रु एवं प्रतिद्वन्दी आपके लिए अनावश्यक समस्याएं तथा परेशानियां उत्पन्न करेंगे अतः ऐसे समय को धैर्य पूर्वक व्यतीत करना चाहिए।

फलादेश - 2012

गोचरवश इस वर्ष में बृहस्पति दशम भाव में भ्रमण करेगा। अतः यह वर्ष आपके लिए काफी महत्वपूर्ण रहेगा। व्यापारिक तथा कार्यक्षेत्र में इस समय आप उन्नति एवं सफलता प्राप्त करेंगे। साथ ही उच्चाधिकारी वर्ग या राजनैतिक महत्व के व्यक्तियों से भी आपके मधुर सम्बन्ध बनेंगे। फलतः इनसे आपको इच्छित लाभ एवं सहयोग की प्राप्ति होगी। इस वर्ष में आपको राज्यस्तर पर किसी सम्मान से सम्मानित भी किया जा सकता हैं। पारिवारिक सुख शान्ति तथा समृद्धि के लिए यह वर्ष अच्छा रहेगा तथा सभी लोग प्रेमपूर्वक रहेंगे। आर्थिक दृष्टि से भी यह वर्ष आपके लिए अच्छा रहेगा एवं आवश्यक मात्रा में धन एवं लाभ अर्जित करने में आप समर्थ रहेंगे। लेकिन इस समय विश्राम का अभाव रहेगा तथा सांसारिक कार्यों को संपन्न करने में आप तत्पर रहेंगे। इस समय अन्य लोगो से आपको शालीनता का व्यवहार भी करना चाहिए। इसके अतिरिक्त गोचरफल अशुभ परन्तु दशा शुभ फल प्रदान करेगी अतः यह वर्ष सामान्यतया शुभ रहेगा।

इस वर्ष में शनि गोचर वश द्वितीय भाव में स्थित रहेगा। अतः इसके प्रभाव से पारिवारिक सुख शान्ति तथा समृद्धि मध्यम रहेगी परन्तु पारिवारिक जन परस्पर मिल जुलकर रहेंगे। भौतिक एवं आर्थिक स्थिति भी इस समय आपकी अच्छी रहेगी तथा आवश्यक मात्रा में धन अर्जित करने में आप समर्थ रहेंगे। मानसिक रूप से भी आप शान्त रहेंगे एवं शान्ति पूर्वक सांसारिक कार्य कलापों को सम्पन्न करेंगे। इस समय विरोधी के निर्बल होने के कारण व्यापार या नौकरी आदि में आप इच्छित उन्नति एवं सफलता भी प्राप्त कर सकते हैं।

इस वर्ष में अन्य गोचर फल शुभ परन्तु दशा सामान्य रहेगी। साथ ही शनि की साढ़ेसाती का अन्तिम दशा का भी प्रभाव रहेगा जिससे यदा कदा आपको उन्नति में व्यवधानों का सामना करना पड़ेगा परन्तु इनका आप पराक्रम एवं परिश्रम से समाधान करने में समर्थ रहेंगे। साथ ही शनि के दुष्प्रभाव को कम करने के लिए आपको नियमित रूप से शनि का पूजन करना चाहिए तथा शनिवार को बाएं हाथ की मध्यमा अंगुली में नीलम या लोहे की अंगूठी धारण करनी चाहिए इससे आपके शुभ प्रभावों में वृद्धि होगी।

गोचरवश इस वर्ष में आपकी कुळँली में राहु की स्थिति चतुर्थ तथा केतु की दशम भाव में रहेगी। इनके प्रभाव से यह वर्ष आपके लिए सामान्यतया शुभ रहेगा। शारीरिक तथा मानसिक रूप से इस समय आप प्रसन्न तथा स्वस्थ रहेंगे तथा आनन्दपूर्वक अपने समय को व्यतीत करेंगे। इस वर्ष में जमीन जायदाद सम्बन्धी कोई क्रय विक्रय कर सकते हैं या वाहन आदि के भी क्रय विक्रय की भी संभावना रहेगी। आर्थिक दृष्टि से आपकी स्थिति सामान्य रहेगी तथा आवश्यक मात्रा में धन एवं लाभ अर्जित करने में परिश्रमपूर्वक सफल रहेंगे। आपके आय स्रोतों में भी इस समय वृद्धि होगी। व्यापारिक तथा कार्यक्षेत्र में भी आप सामान्यतया उन्नतिशील रहेंगे एवं सफलता के मार्ग पर अग्रसर रहेंगे। परन्तु माता पिता के लिए यह वर्ष मध्यम रहेगा तथा यदा कदा वे शारीरिक या मानसिक रूप से कष्ट की अनुभूति कर सकते हैं। इस वर्ष में आपकी दूर समीप की यात्राएँ समय समय पर हो सकती हैं। लेकिन गोचरफल आपके लिए अच्छा नहीं रहेगा तथापि दशा शुभ फल प्रदान करेगी । अतः उपर्युक्त शुभ फलों में यदा कदा न्यूनता का भी आभास होगा परन्तु अन्ततोगत्वा शुभ फल ही अधिक मात्रा में घटित होंगे।

इस वर्ष चन्द्र की महादशा में गुरु का अंतर रहेगा। गुरु पंचम् भाव में कन्या

राशि में स्थित हैं जबकि चन्द्रचतुर्थ भाव में सिंह राशि में स्थित हैं।

यह समय आपके लिए विशेष अच्छा नहीं रहेगा इस समय सक्रियता के भाव की आप में न्यूनता रहेगी शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में वांछित सफलता प्राप्त नहीं होगी साथ ही व्यापार आदि के लिए भी समय प्रतिकूल रहेगा तथा अन्यत्र मार्ग अवरुद्ध रहेंगे जिससे हानि की संभावना बनेगी। आर्थिक स्थिति में भी अस्थिरता रहेगी एवं आय स्रोतों में कमी के कारण यदा कदा आर्थिक परेशानी का भी सामना करना पड़ेगा पारिवारिक वातावरण में भी अशांति रहेगी तथा सदस्यों का परस्पर असहयोग का भाव रहेगा अविवहितों के विवाह में इस समय रूकावटें आएंगी। मित्रवर्ग से भी वांछित सहयोग नहीं मिलेगा तथा आपस में अविश्वास का भाव रहेगा। इसके अतिरिक्त सामाजिक मान प्रतिष्ठा में भी न्यूनता रहेगी तथा शत्रु एवं प्रतिद्वन्दी आपके लिए अनावश्यक समस्याएं तथा परेशानियां उत्पन्न करेंगे अतः ऐसे समय को धैर्य पूर्वक व्यतीत करना चाहिए।

फलादेश - 2013

इस वर्ष में गोचरवश बृहस्पति एकादश भाव में संक्रमण करेगा। अतः यह वर्ष आपके लिए अत्यन्त शुभ एवं सौभाग्यशाली रहेगा। इस समय आपके नवीन आय साधनों में वृद्धि होगी तथा प्रचुर मात्रा में धन एवं लाभ की प्राप्ति होगी। अतः आपकी आर्थिक स्थिति सुदृढ़ रहेगी। व्यापार या कार्यक्षेत्र में भी आपको वांछित उन्नति तथा सफलता मिलेगी। नौकरी या राजनीति आदि में पदोन्नति की भी संभावना रहेगी। ज्योतिष शास्त्र में आप इस समय पूर्ण श्रद्धा व्यक्त करेंगे तथा व्यस्तता के उपरान्त भी मानसिक प्रसन्नता एवं संतुष्टि से युक्त रहेंगे। सामाजिक क्षेत्र में भी इस वर्ष आपकी मान प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी तथा दूर दूर तक आपकी प्रसिद्धि फैलेगी। जिससे सभी लोग आपके प्रभाव को स्वीकार करेंगे तथा आपका हार्दिक सम्मान करेंगे। साथ ही आय गोचर तथा दशाफल भी इस समय शुभ फल प्रदान करेंगे। अतः यह वर्ष आप का अत्यन्त ही सुख एवं प्रसन्नतापूर्वक व्यतीत होगा।

इस वर्ष में शनि तृतीय भाव में परिभ्रमण करेगा अतः यह समय आपके लिए अत्यन्त ही शुभ रहेगा। इस समय आपको समस्त रूक हुए कार्यों में सफलता प्राप्त होगी तथा व्यापारिक एवं आर्थिक क्षेत्र में उन्नति कारक परिवर्तन होगा। इस वर्ष में आपकी लम्बी दूरी के शुभ एवं महत्वपूर्ण यात्रा भी सम्पन्न होगी। जिससे आपको वर्तमान तथा भविष्य में आशातीत लाभ तथा सम्मान की प्राप्ति होगी। कार्यक्षेत्र में इस समय आप उन्नति पथ पर अग्रसर होंगे एवं किसी महत्वपूर्ण पद को प्राप्त करने में समर्थ रहेंगे। इसके साथ ही इस समय अन्य गोचर तथा दशा फल भी आपके लिए शुभ फल प्रदान करेंगे। अतः यह वर्ष आपके लिए अत्यन्त ही महत्वपूर्ण एवं सौभाग्यशाली सिद्ध होगा तथा धन ऐश्वर्य एवं समृद्धि को प्राप्त करने में आप सफल रहेंगे।

इस वर्ष में राहु की स्थिति गोचरवश तृतीय भाव में तथा केतु की नवम भाव में रहेगी। इनके प्रभाव से यह वर्ष आपके लिए अत्यन्त ही शुभ एवं महत्वपूर्ण रहेगा। इस वर्ष में आपके मान प्रतिष्ठा एवं पराक्रम में वृद्धि होगी तथा सभी लोग आपके प्रभाव को स्वीकार करेंगे। साथ ही शत्रु एवं प्रतिद्वन्दी भी परास्त होंगे तथा आपके समक्ष समर्पण करेंगे। मानसिक रूप से आपकी स्थिति अच्छी रहेगी तथा सभी चिन्ताएँ समाप्त हो जाएँगी। आर्थिक दृष्टि से भी इस समय आपकी उन्नति होगी। तथा आय स्रोतों में भी वृद्धि होगी फलतः प्रचुर मात्रा में धन एवं लाभ अर्जित करने में आप सफल होंगे। कार्यक्षेत्र में इस समय स्वपरिश्रम से कोई विशिष्ट उन्नति या सफलता अर्जित करेंगे साथ ही मित्रवर्ग से भी आपको यथोचित सुख एवं सहयोग मिलेगा। परन्तु बन्धुवर्ग से यदा कदा चिन्ता उत्पन्न हो सकती है। साथ ही नवमस्थ केतु के प्रभाव से आपको यदा कदा शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में परिश्रम अधिक करना पड़ेगा। लेकिन आय गोचरफल तथा दशाफल अनुकूल होने के कारण यह वर्ष आपके लिए शुभ एवं सौभाग्यशाली सिद्ध होगा।

चन्द्र की महादशा में गुरु का अंतर ०६/०१/२०१३ को समाप्त होगा। उसके बाद शनि का अंतर प्रारंभ होगा। दोनों अंतर्दशाओं के स्वामी ग्रह एक ही भाव एवं राशि में स्थित हैं।

यह समय आपके लिए विशेष अच्छा नहीं रहेगा इस समय सक्रियता के भाव की आप में न्यूनता रहेगी शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में वांछित सफलता प्राप्त नहीं होगी साथ ही व्यापार आदि के लिए भी समय प्रतिकूल रहेगा तथा अन्यत्र मार्ग अवरुद्ध रहेंगे जिससे हानि

की संभावना बनेगी। आर्थिक स्थिति में भी अस्थिरता रहेगी एवं आय स्रोतों में कमी के कारण यदा कदा आर्थिक परेशानी का भी सामना करना पड़ेगा पारिवारिक वातावरण में भी अशांति रहेगी तथा सदस्यों का परस्पर असहयोग का भाव रहेगा अविवहितों के विवाह में इस समय रूकावटें आएंगी। मित्रवर्ग से भी वांछित सहयोग नहीं मिलेगा तथा आपस में अविश्वास का भाव रहेगा। इसके अतिरिक्त सामाजिक मान प्रतिष्ठा में भी न्यूनता रहेगी तथा शत्रु एवं प्रतिद्वन्दी आपके लिए अनावश्यक समस्याएं तथा परेशानियां उत्पन्न करेंगे अतः ऐसे समय को धैर्य पूर्वक व्यतीत करना चाहिए।

यह समय आपके लिए विशेष शुभ नहीं रहेगा इस समय भी इच्छित परिणामों में भी न्यूनता रहेगी जिससे मन में तनाव रहेगा साथ ही रचनात्मक कार्यों में भी आपकी रुचि नहीं रहेगी। व्यापार मे आपके लाभ एवं उन्नति के मार्ग अवरुद्ध रहेंगे एवं समस्याओं का भी समय समय पर सामना करना पड़ेगा। नौकरी में भी स्थिति सन्तोषजनक नहीं रहेगी तथा कार्यक्षेत्र में समस्याएं उत्पन्न होंगी तथा वरिष्ठ सहयोगी आपके प्रति अच्छा व्यवहार नहीं करेंगे। सामाजिक मान प्रत्षिठा भी अच्छी नहीं रहेगी तथा महत्वपूर्ण लोगों से सम्पर्को में न्यूनता रहेगी। इसके अतिरिक्त दूर समीप की अनिच्छित एवं व्यर्थ की यात्राएं भी सम्पन्न होंगी। परन्तु पारिवारिक सुख शान्ति बनी रहेगी।

फलादेश - 2014

इस वर्ष में गोचर वश बृहस्पति द्वादश भाव में भ्रमण करेगा अतः इस समय आपका शारीरिक स्वास्थ्य सामान्यतया अच्छा रहेगा परन्तु मानसिक रूप से यदा कदा आप उद्विग्नता की अनुभूति कर सकते हैं। आर्थिक दृष्टि से वर्ष अच्छा रहेगा परन्तु व्यय की अधिकता रहेगी। इस वर्ष में आप किसी शुभ या मांगलिक कार्य पर व्यय कर सकते है। कार्य क्षेत्र के लिए वर्ष परिश्रमशील रहेगा परन्तु उन्नति एवं सफलताएं प्राप्त करने में आप समर्थ रहेंगे। इस समय आपकी दूर समीप की कोई यात्रा भी होगी यद्यपि इसमें व्यय अधिक होगा परन्तु भविष्य के लिए लाभ दायक सम्पर्क बनेंगे जिससे लाभ एवं सम्मान की प्राप्ति होगी।

इसके साथ ही इस समय अन्य गोचर तथा दशा फल अनुकूल रहेंगे जिससे आपको शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में परिश्रम एवं पराक्रम से सफलता मिलती रहेगी तथा व्यय के साथ साथ उचित धनार्जन भी होगा अतः आप किंचित शान्ति की अनुभूति अवश्य करेंगे।

इस वर्ष में शनि तृतीय भाव में परिभ्रमण करेगा अतः यह समय आपके लिए अत्यन्त ही शुभ रहेगा। इस समय आपको समस्त रूक हुए कार्यों में सफलता प्राप्त होगी तथा व्यापारिक एवं आर्थिक क्षेत्र में उन्नति कारक परिवर्तन होगा। इस वर्ष में आपकी लम्बी दूरी के शुभ एवं महत्वपूर्ण यात्रा भी सम्पन्न होगी। जिससे आपको वर्तमान तथा भविष्य में आशातीत लाभ तथा सम्मान की प्राप्ति होगी। कार्यक्षेत्र में इस समय आप उन्नति पथ पर अग्रसर होंगे एवं किसी महत्वपूर्ण पद को प्राप्त करने में समर्थ रहेंगे। इसके साथ ही इस समय अन्य गोचर तथा दशा फल भी आपके लिए शुभ फल प्रदान करेंगे। अतः यह वर्ष आपके लिए अत्यन्त ही महत्वपूर्ण एवं सौभाग्यशाली सिद्ध होगा तथा धन ऐश्वर्य एवं समृद्धि को प्राप्त करने में आप सफल रहेंगे।

इस वर्ष में राहु की स्थिति गोचरवश तृतीय भाव में तथा केतु की नवम भाव में रहेगी। इनके प्रभाव से यह वर्ष आपके लिए अत्यन्त ही शुभ एवं महत्वपूर्ण रहेगा। इस वर्ष में आपके मान प्रतिष्ठा एवं पराक्रम में वृद्धि होगी तथा सभी लोग आपके प्रभाव को स्वीकार करेंगे। साथ ही शत्रु एवं प्रतिद्वन्दी भी परास्त होंगे तथा आपके समक्ष समर्पण करेंगे। मानसिक रूप से आपकी स्थिति अच्छी रहेगी तथा सभी चिन्ताएँ समाप्त हो जाएँगी। आर्थिक दृष्टि से भी इस समय आपकी उन्नति होगी। तथा आय स्रोतों में भी वृद्धि होगी फलतः प्रचुर मात्रा में धन एवं लाभ अर्जित करने में आप सफल होंगे। कार्यक्षेत्र में इस समय स्वपरिश्रम से कोई विशिष्ट उन्नति या सफलता अर्जित करेंगे साथ ही मित्रवर्ग से भी आपको यथोचित सुख एवं सहयोग मिलेगा। परन्तु बन्धुवर्ग से यदा कदा चिन्ता उत्पन्न हो सकती है। साथ ही नवमस्थ केतु के प्रभाव से आपको यदा कदा शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में परिश्रम अधिक करना पड़ेगा। लेकिन आय गोचरफल तथा दशाफल अनुकूल होने के कारण यह वर्ष आपके लिए शुभ एवं सौभाग्यशाली सिद्ध होगा।

चन्द्र की महादशा में शनि का अंतर १०/०८/२०१४ को समाप्त होगा। उसके बाद बुध का अंतर प्रारंभ होगा। शनि पंचम् भाव में कन्या राशि में स्थित हैं जबकि बुध प्रथम भाव में वृष राशि में स्थित हैं।

यह समय आपके लिए विशेष शुभ नहीं रहेगा इस समय भी इच्छित परिणामों में

भी न्यूनता रहेगी जिससे मन में तनाव रहेगा साथ ही रचनात्मक कार्यों में भी आपकी रुचि नहीं रहेगी। व्यापार मे आपके लाभ एवं उन्नति के मार्ग अवरुद्ध रहेंगे एवं समस्याओं का भी समय समय पर सामना करना पड़ेगा। नौकरी में भी स्थिति सन्तोषजनक नहीं रहेगी तथा कार्यक्षेत्र में समस्याएं उत्पन्न होंगी तथा वरिष्ठ सहयोगी आपके प्रति अच्छा व्यवहार नहीं करेंगे। सामाजिक मान प्रत्षिठा भी अच्छी नहीं रहेगी तथा महत्वपूर्ण लोगों से सम्पर्को में न्यूनता रहेगी। इसके अतिरिक्त दूर समीप की अनिच्छित एवं व्यर्थ की यात्राएं भी सम्पन्न होंगी। परन्तु पारिवारिक सुख शान्ति बनी रहेगी।

यह समय आपके लिए विशेष अच्छा नहीं रहेगा। इस समय आप में निष्क्रियता का भाव रहेगा फलतः कार्यों में इच्छित सफलता नहीं मिलेगी साथ ही रुके हुए कार्य भी पूर्ण नहीं होंगे। व्यापारिक क्षेत्र में इस समय समस्याएं उत्पन्न होगी तथा लाभ मार्ग भी अवरुद्ध होंगे फलतः यदा कदा आर्थिक परेशानी का भी सामना करना पडेगा इस समय नवीन कार्यों का प्रारंभ भी नहीं होगा। पदोन्नति भी इस समय विलम्ब होगा तथा अधिकारी वर्ग से संबधो में तनाव रहेगा बेरोजगारों को भी रोजगार की संभावना कम ही रहेगी परिवार में शांति का वातावरण नहीं रहेगा तथा सदस्यों का आपस में वैमनस्य का भाव रहेगा लेकिन दूर समीप की यात्राओं से आपको लाभ होगा।

फलादेश - 2015

इस वर्ष में गोचरीय परिभ्रमण से बृहस्पति की स्थिति द्वादश भाव में रहेगी। अतः आपका शारीरिक स्वास्थ्य मध्यम रहेगा परन्तु मानसिक रूप से यदा कदा आप अशान्ति की अनुभूति करेंगे। आर्थिक स्थिति भी आपकी सामान्य रहेगी तथा व्यय अधिक होगा जिससे आप अल्प मात्रा में परेशानी की अनुभूति करेंगे। इस वर्ष में आप किसी शुभ एवं मांगलिक कार्य पर व्यय भी कर सकते हैं। कार्य क्षेत्र की उन्नति के लिए आपको अधिक पराक्रम एवं परिश्रम करना पड़ेगा तभी न्यूनाधिक सफलता प्राप्त हो सकती है। इस वर्ष में आपकी दूर समीप की कोई यात्रा सम्पन्न होगी साथ ही इसमें व्यय की भी अधिकता रहेगी जिससे आर्थिक विषमता उत्पन्न होगी परन्तु भविष्य में आपकी लाभ की संभावनाएं बन सकती हैं।

इसके साथ ही इस समय अन्य गोचर शुभ परन्तु दशा मध्यम रहेगी अतः सांसारिक महत्व के शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में आपको पराक्रम एवं परिश्रम से ही लाभ एवं सुख की प्राप्ति होगी। साथ ही यत्न पूर्वक आय स्रोतों में भी वृद्धि होगी। अतः अधिक शुभ फलों की प्राप्ति के लिए आपको नियमित रूप से बृहस्पति का पूजन व्रत तथा दानादि करना चाहिए।

इस वर्ष में गोचर वश शनि चतुर्थ भाव में भ्रमण करेगा। अतः इसके प्रभाव से समय मध्यम रहेगा तथा शुभ एवं महत्वपूर्ण सांसारिक कार्यों को आप परिश्रम एवं पराक्रम से ही सम्पन्न करेंगे। बन्धु एवं परिवार से इस समय न्यूनाधिक सहयोग प्राप्त होगा तथा माता का स्वास्थ्य भी मध्यम रहेगा। आर्थिक स्थिति इस समय सामान्य रहेगी तथा धनार्जन के साथ साथ व्यय भी होता रहेगा लेकिन आर्थिक स्थिति पर इसका कोई विशेष प्रभाव नहीं व्यापारिक तथा कार्य क्षेत्र में इस समय आपकी उन्नति होगी तथा ऋण लेकर आपका कोई आवास या जायदाद संबंधी कार्य भी प्रारंभ हो सकता है जिसमें वर्तमान में समस्याएं परन्तु भविष्य में इच्छित लाभ की संभावनाएं बनेंगी।

इस समय यद्यपि अन्य गोचर फल शुभ रहेंगे परन्तु दशाफल विशेष अनुकूल नहीं रहेगी तथा शनि की दशा का भी प्रभाव रहेगा फलतः यदा कदा शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में अनावश्यक समस्याएं तथा मानसिक तनाव हो सकता है अतः इन अशुभ फलों को कम करने के लिए आपको नियमित रूप से शनि का पूजन तथा दान करना चाहिए एवं शनिवार को बाएं हाथ की मध्यमा अंगुली में नीलम या लोहे की अंगूठी धारण करनी चाहिए। इससे अशुभ प्रभाव कम होंगे तथा शुभ फलों में वृद्धि होगी।

इस वर्ष में राहु की स्थिति गोचर वश द्वितीय तथा केतु की अष्टम भाव में रहेगी। इसके प्रभाव से आपका शारीरिक स्वास्थ्य मध्यम रहेगा तथा यदा कदा मानसिक उद्विग्नता भी उत्पन्न होगी। साथ ही पारिवारिक सुख शान्ति तथा समृद्धि भी सामान्य ही रहेगी परन्तु पारिवारिक जनों के परस्पर संबंधों में यदा कदा मतभेद उत्पन्न हो सकते हैं। इस समय आपके शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्य परिश्रम से सम्पन्न होंगे तथा न्यूनाधिक सफलता भी आपको प्राप्त होगी। साथ ही आर्थिक स्थिति भी मध्यम रहेगी तथा आवश्यक धनार्जन होता रहेगा परन्तु व्यय भी अधिक होगा लेकिन इसका दुष्प्रभाव अल्प रहेगा। इसके अतिरिक्त इस वर्ष में आप जायदाद संबंधी लाभ भी प्राप्त कर सकते हैं ।

इस समय आपके लिए अन्य गोचर शुभ परन्तु दशा मध्यम रहेगी अतः कार्य क्षेत्र

की उन्नति में समस्याएं आएंगी परन्तु आप अपने पराक्रम एवं परिश्रम से उनका समाधान करने में समर्थ हो सकेंगे। साथ ही अधिक मात्रा में शुभ फल की प्राप्ति के लिए आपको नियमित रूप से राहु एवं केतु का पूजन जप तथा दानादि कार्य करने चाहिए।

इस वर्ष चन्द्र की महादशा में बुध का अंतर रहेगा। बुध प्रथम भाव में वृष राशि में स्थित हैं जबकि चन्द्रचतुर्थ भाव में सिंह राशि में स्थित हैं।

यह समय आपके लिए विशेष अच्छा नहीं रहेगा। इस समय आप में निष्क्रियता का भाव रहेगा फलतः कार्यों में इच्छित सफलता नहीं मिलेगी साथ ही रुके हुए कार्य भी पूर्ण नहीं होंगे। व्यापारिक क्षेत्र में इस समय समस्याएं उत्पन्न होगी तथा लाभ मार्ग भी अवरुद्ध होंगे फलतः यदा कदा आर्थिक परेशानी का भी सामना करना पडेगा इस समय नवीन कार्यों का प्रारंभ भी नहीं होगा। पदोन्नति भी इस समय विलम्ब होगा तथा अधिकारी वर्ग से संबधो में तनाव रहेगा बेरोजगारों को भी रोजगार की संभावना कम ही रहेगी परिवार में शांति का वातावरण नहीं रहेगा तथा सदस्यों का आपस में वैमनस्य का भाव रहेगा लेकिन दूर समीप की यात्राओं से आपको लाभ होगा।

फलादेश - 2016

बृहस्पति इस वर्ष में गोचरवश प्रथम भाव में भ्रमण करेगा। इसके प्रभाव से आपका शारीरिक एवं मानसिक स्वास्थ्य अच्छा रहेगा तथा सामाजिक क्षेत्र में भी आपको किचिंत मान सम्मान एवं प्रतिष्ठा की प्राप्ति होगी। इस वर्ष व्यापार या अन्य कार्य क्षेत्र में आप उन्नति एवं सफलता प्राप्त करने में समर्थ रहेंगे। इस समय अविवाहितों के विवाह की भी संभावना बढ़ेगी। धर्म के प्रति आपके मन में श्रद्धा का भाव उत्पन्न होगा। एवं यत्नपूर्वक आर्थिक कार्यों को सम्पन्न करने में आप तत्पर रहेंगे। इस वर्ष में आपके आय स्रोतों में भी वृद्धि होगी फलतः आवश्यक मात्रा में धन अर्जित करने में आप सफल रहेंगे। जिससे आर्थिक स्थिति सुदृढ होगी। साथ ही विगत रुके हुए कार्यों को पूर्ण करने में भी आपको सफलता मिलेगी। आप स्वतन्त्र प्रवृति का अनुपालन करेंगे एवं अपने को अत्यन्त ही अनुभवी समझने लगेंगे। अतः यह समय आपके लिए महत्वपूर्ण परन्तु विश्रामरहित रहेगा। इसके अतिरिक्त अन्य गोचरफल अशुभ होने से परन्तु दशा फल अनुकूल रहने से उपर्युक्त शुभ फलों में यदा कदा आपको न्यूनता का आभास होगा। परन्तु परिश्रम करने के उपरान्त आप सकरात्मक फल प्राप्त करने में सफल होंगे।

इस वर्ष में गोचर वश शनि चतुर्थ भाव में भ्रमण करेगा। अतः इसके प्रभाव से समय मध्यम रहेगा तथा शुभ एवं महत्वपूर्ण सांसारिक कार्यों को आप परिश्रम एवं पराक्रम से ही सम्पन्न करेंगे। बन्धु एवं परिवार से इस समय न्यूनाधिक सहयोग प्राप्त होगा तथा माता का स्वास्थ्य भी मध्यम रहेगा। आर्थिक स्थिति इस समय सामान्य रहेगी तथा धनार्जन के साथ साथ व्यय भी होता रहेगा लेकिन आर्थिक स्थिति पर इसका कोई विशेष प्रभाव नहीं व्यापारिक तथा कार्य क्षेत्र में इस समय आपकी उन्नति होगी तथा ऋण लेकर आपका कोई आवास या जायदाद संबंधी कार्य भी प्रारंभ हो सकता है जिसमें वर्तमान में समस्याएं परन्तु भविष्य में इच्छित लाभ की संभावनाएं बनेंगी।

इस समय यद्यपि अन्य गोचर फल शुभ रहेंगे परन्तु दशाफल विशेष अनुकूल नहीं रहेगी तथा शनि की दशा का भी प्रभाव रहेगा फलतः यदा कदा शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में अनावश्यक समस्याएं तथा मानसिक तनाव हो सकता है अतः इन अशुभ फलों को कम करने के लिए आपको नियमित रूप से शनि का पूजन तथा दान करना चाहिए एवं शनिवार को बाएं हाथ की मध्यमा अंगुली में नीलम या लोहे की अंगूठी धारण करनी चाहिए। इससे अशुभ प्रभाव कम होंगे तथा शुभ फलों में वृद्धि होगी।

इस वर्ष राहु की स्थिति राशि तथा केतु की सप्तम भाव में गोचर वश रहेगी। इसके प्रभाव से यह वर्ष आपके लिए मध्यम रहेगा। इस समय आपका स्वास्थ्य विशेष अच्छा नहीं रहेगा साथ ही मानसिक रूप से भी यदा कदा आपको परेशानी रहेगी। पति पत्नी के संबंध सामान्य ही रहेंगे तथापि यदा कदा इसमें मतभेद हो सकते हैं लेकिन इसका कोई दुष्प्रभाव नहीं होगा। आर्थिक स्थिति इस वर्ष सामान्य रहेगी तथा परिश्रम एवं पराक्रम के द्वारा आप आवश्यक मात्रा में धन अर्जित करेंगे लेकिन व्यय की भी अधिकता रहेगी। कार्य क्षेत्र की उन्नति एवं सफलता की दृष्टि से वर्ष संघर्ष पूर्ण रहेगा तथा परिश्रम से ही आप उन्नति मार्ग प्रशस्त कर सकेंगे। इस समय आपके पुराने सम्पर्कों में कमी होगी तथा नवीन सम्पर्क स्थापित होंगे जिससे भविष्य में आपको न्यूनाधिक सफलता प्राप्त हो सकती है।

इसके साथ ही अन्य गोचर फल अनुकूल परन्तु दशा फल मध्यम रहेगा। अतः

आपको शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों को सम्पन्न करने के लिए अतिरिक्त परिश्रम एवं संघर्ष करना पड़ेगा। अतः अशुभ फलों में न्यूनता तथा शुभ फलों में वृद्धि के लिए आपको नियमित रूप से राहु केतु का पूजन, जप एवं दान करने चाहिए।

इस वर्ष चन्द्र की महादशा में तीन ग्रहों की अंतर्दशा रहेगी। इस वर्ष बुध का अंतर १०/०१/२०१६ को समाप्त होगा। उसके बाद केतु अंतर्दशा प्रारंभ होगी तथा १०/०८/२०१६ तक चलेगी। इस वर्ष का अंत शुक्र की अंतर्दशा में होगा। आपकी जन्मकुंडली में महादशा का स्वामी चतुर्थ भाव में सिंह राशि में स्थित हैं।

यह समय आपके लिए विशेष अच्छा नहीं रहेगा। इस समय आप में निष्क्रियता का भाव रहेगा फलतः कार्यों में इच्छित सफलता नहीं मिलेगी साथ ही रुके हुए कार्य भी पूर्ण नहीं होंगे। व्यापारिक क्षेत्र में इस समय समस्याएं उत्पन्न होगी तथा लाभ मार्ग भी अवरुद्ध होंगे फलतः यदा कदा आर्थिक परेशानी का भी सामना करना पडेगा इस समय नवीन कार्यों का प्रारंभ भी नहीं होगा। पदोन्नति भी इस समय विलम्ब होगा तथा अधिकारी वर्ग से संबधो में तनाव रहेगा बेरोजगारों को भी रोजगार की संभावना कम ही रहेगी परिवार में शांति का वातावरण नहीं रहेगा तथा सदस्यों का आपस में वैमनस्य का भाव रहेगा लेकिन दूर समीप की यात्राओं से आपको लाभ होगा।

यह समय आपके लिए विशेष शुभ एवं अनुकूल नहीं रहेगा। इस समय व्यापार में समस्याएं उत्पन्न होंगी तथा हानि की भी सम्भावना बनेगी तथा कोई भी महत्वपूर्ण योजनाएं सफल नहीं होंगी जिससे आपके मन में निराशा उत्पन्न होगी। साथ ही यदा कदा धनाभाव का सामना करना पड़ सकता है। पारवारिक सुख शान्ति एवं समृद्धि भी अच्छी नहीं रहेगी तथा सदस्यों का आपस में प्रेमपूर्वक सहयोग के भाव की कमी रहेगी। साथ ही धर्म के प्रति भी आपकी श्रद्धा में न्यूनता आएगी तथा धार्मिक प्रवृति के लोगों से आपके सम्पर्क नहीं होंगे लेकिन दूर समीप की यात्राएं से आपको लाभ एवं सम्मान की प्राप्ति होगी।

यह समय आपके लिए अनुकूलता नहीं रहेगा इस समय आपको सर्वत्र परेशानी समस्याओं का सामना करना पड़ेगा। तथा उन्नति मार्ग भी अवरुद्ध रहेंगे। व्यापार के लिए समय प्रतिकूल रहेगा। एवं लाभमार्ग अवरुद्ध रहेंगे। आर्थिक दृष्टि से स्थिति अच्छी नहीं रहेगी जिससे समय समय पर आपको आर्थिक परेशानी का सामना करना पड़ेगा। नौकरी में पदोन्नति सम्बधी व्यवधान आएंगे तथा अधिकारी वर्ग से सम्बंधों में तनाव रहेगा। पारिवारिक सुख शान्ति तथा समृद्धि में भी न्यूनता आएगी एक दूसरे के प्रति असहयोग का भाव बना रहेगा। इसके अतिरिक्त प्रभावशाली लोगों से सम्पर्क स्थापित होंगे तथा उनसे भविष्य में वांछित लाभ तथा सहयोग प्राप्त होगा अतः संयमपूर्वक समय व्यतीत करें।

फलादेश - 2017

बृहस्पति इस वर्ष आपकी कुँडली में द्वितीय भाव में प्रवेश करेगा। इसके शुभ प्रभाव से आपकी आर्थिक स्थिति उत्तम रहेगी तथा प्रचुर मात्रा में धन का लाभ प्राप्त करने आप समर्थ रहेंगे। पारिवारिक सुख, शान्ति एवं समृद्धि के लिए भी यह वर्ष उत्तम रहेगा। तथा लोग परस्पर प्रेमपूर्वक रहेंगे। इस वर्ष में आपको पुत्र संतति की भी प्राप्ति हो सकती है। लेकिन कभी कभी व्यय की भी अधिकता होगी जिससे आप का मन खिन्न रहेगा। सामाजिक प्रतिष्ठा के लिए यह वर्ष शुभ रहेगा तब समाज में एक प्रतिष्ठित एवं प्रभावशाली व्यक्ति के रूप में आदरणीय समझे जाएंगे। धार्मिक कर्मो में भी आपको रुचि उत्पन्न होगी व वाणी में मधुरता तथा ओजस्विता का भाव आएगा एवं अन्य लोग आपकी वातो से प्रभावित होंगे। इस वर्ष में जायदाद या व्यापारिक क्षेत्र में भी आप इच्छित लाभ अर्जित करेंगे। परन्तु इस वर्ष में आय गोचरफल अधिक शुभ नहीं रहेगा तथा अशुभ फलों की समय समय पर प्राप्ति होगी परन्तु दशाफल अनुकूल फल प्रदान करेगी तथापि यदा कदा उपर्युक्त शुभ फलों में आपको न्यूनता का आभास अवश्य होगा। परन्तु शुभ फलों की प्राप्ति ही अधिक होगी यद्यपि इसके लिए आपको अतिरिक्त परिश्रम तथा संघर्ष करना पड़ेगा।

इस वर्ष में गोचर वश शनि चतुर्थ भाव में भ्रमण करेगा। अतः इसके प्रभाव से समय मध्यम रहेगा तथा शुभ एवं महत्वपूर्ण सांसारिक कार्यों को आप परिश्रम एवं पराक्रम से ही सम्पन्न करेंगे। बन्धु एवं परिवार से इस समय न्यूनाधिक सहयोग प्राप्त होगा तथा माता का स्वास्थ्य भी मध्यम रहेगा। आर्थिक स्थिति इस समय सामान्य रहेगी तथा धनार्जन के साथ साथ व्यय भी होता रहेगा लेकिन आर्थिक स्थिति पर इसका कोई विशेष प्रभाव नहीं व्यापारिक तथा कार्य क्षेत्र में इस समय आपकी उन्नति होगी तथा ऋण लेकर आपका कोई आवास या जायदाद संबंधी कार्य भी प्रारंभ हो सकता है जिसमें वर्तमान में समस्याएं परन्तु भविष्य में इच्छित लाभ की संभावनाएं बनेंगी।

इस समय यद्यपि अन्य गोचर फल शुभ रहेंगे परन्तु दशाफल विशेष अनुकूल नहीं रहेगी तथा शनि की दशा का भी प्रभाव रहेगा फलतः यदा कदा शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में अनावश्यक समस्याएं तथा मानसिक तनाव हो सकता है अतः इन अशुभ फलों को कम करने के लिए आपको नियमित रूप से शनि का पूजन तथा दान करना चाहिए एवं शनिवार को बाएं हाथ की मध्यमा अंगुली में नीलम या लोहे की अंगूठी धारण करनी चाहिए। इससे अशुभ प्रभाव कम होंगे तथा शुभ फलों में वृद्धि होगी।

इस वर्ष राहु की स्थिति राशि तथा केतु की सप्तम भाव में गोचर वश रहेगी। इसके प्रभाव से यह वर्ष आपके लिए मध्यम रहेगा। इस समय आपका स्वास्थ्य विशेष अच्छा नहीं रहेगा साथ ही मानसिक रूप से भी यदा कदा आपको परेशानी रहेगी। पति पत्नी के संबंध सामान्य ही रहेंगे तथापि यदा कदा इसमें मतभेद हो सकते हैं लेकिन इसका कोई दुष्प्रभाव नहीं होगा। आर्थिक स्थिति इस वर्ष सामान्य रहेगी तथा परिश्रम एवं पराक्रम के द्वारा आप आवश्यक मात्रा में धन अर्जित करेंगे लेकिन व्यय की भी अधिकता रहेगी। कार्य क्षेत्र की उन्नति एवं सफलता की दृष्टि से वर्ष संघर्ष पूर्ण रहेगा तथा परिश्रम से ही आप उन्नति मार्ग प्रशस्त कर सकेंगे। इस समय आपके पुराने सम्पर्कों में कमी होगी तथा नवीन सम्पर्क स्थापित होंगे जिससे भविष्य में आपको न्यूनाधिक सफलता प्राप्त हो सकती है।

इसके साथ ही अन्य गोचर फल अनुकूल परन्तु दशा फल मध्यम रहेगा। अतः

आपको शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों को सम्पन्न करने के लिए अतिरिक्त परिश्रम एवं संघर्ष करना पड़ेगा। अतः अशुभ फलों में न्यूनता तथा शुभ फलों में वृद्धि के लिए आपको नियमित रूप से राहु केतु का पूजन, जप एवं दान करने चाहिए।

इस वर्ष चन्द्र की महादशा में शुक्र का अंतर रहेगा। शुक्र प्रथम भाव में वृष राशि में स्थित हैं जबकि चन्द्रचतुर्थ भाव में सिंह राशि में स्थित हैं।

यह समय आपके लिए अनुकूलता नहीं रहेगा इस समय आपको सर्वत्र परेशानी समस्याओं का सामना करना पड़ेगा। तथा उन्नति मार्ग भी अवरुद्ध रहेंगे। व्यापार के लिए समय प्रतिकूल रहेगा। एवं लाभमार्ग अवरुद्ध रहेंगे। आर्थिक दृष्टि से स्थिति अच्छी नहीं रहेगी जिससे समय समय पर आपको आर्थिक परेशानी का सामना करना पड़ेगा। नौकरी में पदोन्नति सम्बधी व्यवधान आएंगे तथा अधिकारी वर्ग से सम्बंधों में तनाव रहेगा। पारिवारिक सुख शान्ति तथा समृद्धि में भी न्यूनता आएगी एक दूसरे के प्रति असहयोग का भाव बना रहेगा। इसके अतिरिक्त प्रभावशाली लोगों से सम्पर्क स्थापित होंगे तथा उनसे भविष्य में वांछित लाभ तथा सहयोग प्राप्त होगा अतः संयमपूर्वक समय व्यतीत करें।

फलादेश - 2018

इस वर्ष में बृहस्पति तृतीय भाव में गोचरवश भ्रमण करेगा अतः इसके प्रभाव से आपकी दूर समीप की लाभदायक यात्राएं सम्पन्न होंगी। इससे आपको प्रचुर मात्रा में धनार्जन भी होगा। इस समय साहित्य और दर्शन की ओर आपकी रुचि उत्पन्न होगी। पुराने मित्रों से इस वर्ष में आपको पूर्ण सहयोग प्राप्त होगा तथा नवीन मित्रों की भी प्राप्ति होगी। साथ ही मित्रवर्ग के द्वारा भविष्य में लाभ के मार्ग भी प्रशस्त होंगे। स्वास्थ्य की दृष्टि से यह वर्ष सामान्यतया अच्छा रहेगा एवं कार्यक्षेत्र में भी उन्नति करते रहेंगे। साथ ही इस समय मानसिक संकीर्णता को छोड़कर आप विशालहृदयी के रूप में अन्य जनों के सम्मुख अपने आप को प्रस्तुत करेंगे। अतःसमाज से आप को इच्छित आदर एवं सम्मान की प्राप्ति होगी। इस समय आय गोचर तथा दशा फल भी अनुकूल रहेगा। अतः यह वर्ष आपके लिए उत्तम एवं महत्वपूर्ण रहेगा।

इस वर्ष में गोचर वश शनि की स्थिति पंचम भाव में रहेगी। अतः इसके प्रभाव से आपका शारीरिक एवं मानसिक स्वास्थ्य अच्छा रहेगा तथा अपने सांसारिक महत्व के शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों को आप उत्साह एवं परिश्रम से सम्पन्न करेंगे। इस समय आपकी मानसिकता में परिवर्तन की संभावना रहेगी। सामाजिक जनों से आपके संबंध अच्छे रहेंगे तथा उनसे मान सम्मान प्राप्त होता रहेगा। आर्थिक दृष्टि से वर्ष उत्तम रहेगा तथा प्रचुर मात्रा में धन एवं लाभ की प्राप्ति होगी। साथ ही आय स्रोतों में वृद्धि होगी। संतति पक्ष से आपको सन्तुष्टि रहेगी तथा अपने क्षेत्र में वे उन्नतिशील रहेंगे। इस समय स्त्री का स्वास्थ्य भी अच्छा रहेगा एवं परस्पर संबंधों में मधुरता रहेगी तथा उनसे सुख एवं सहयोग प्राप्त होगा।

इस वर्ष अन्य गोचर तथा दशाफल भी शुभ एवं अनुकूल रहेंगे। अतः आपको प्रत्येक क्षेत्र में सफलता की प्राप्ति होगी। साथ ही राजनैतिक व्यक्तियों से भी आप संबंध स्थापित करेंगे एवं उनसे उचित लाभ एवं सहयोग प्राप्त करेंगे। इस वर्ष में आपको किसी विशिष्ट लाभ की भी प्राप्ति हो सकती है अतः अपने शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों को सिद्ध करने में तत्पर रहेंगे तथा समय का सदुपयोग करें।

इस वर्ष में गोचरवश राहु की स्थिति द्वादश भाव में तथा केतु की स्थिति षष्ठ भाव में रहेगी अतः यह वर्ष सामान्यतया शुभ ही रहेगा इस समय आपका स्वास्थ्य भी अच्छा रहेगा एवं मानसिक रूप से भी आपकी लम्बी दूरी की यात्रा होगी या कोई विदेश यात्रा भी हो सकती है। इस समय आप यात्राओं में अधिक व्यय करेंगे साथ ही मनोरंजन आदि में आप अपना अधिकांश समय व्यतीत करेंगे। आर्थिक स्थति भी इस वर्ष आपकी अच्छी रहेगी तथा प्रचुर मात्रा में धन एवं लाभ अर्जित होगा। केतु के प्रभाव से आप शत्रु पर भी विजय प्राप्त कर सकते हैं। समाज में सभी लोग आपके प्रभुत्व को स्वीकार करेंगे। जिससे आपकी में प्रतिष्ठा बढेगी कार्यक्षेत्र में भी इस समय उन्नतिशील रहेंगे। इसके अतिरिक्त गोचर तथा दशा इस समय शुभ रहेगी। अतः समय अच्छा ही रहेगा।

चन्द्र महादशा ११/०४/२०१८ को समाप्त होगी तथा उसी समय मंगल की महादशा प्रांरभ होगी। यह आपके जीवन में परिवर्तन का द्योतक है। यह वर्ष चन्द्र की महादशा में शुक्र के अंतर से प्रांरभ हो रहा है। चन्द्र की महादशा में सूर्य का अंतर १०/१०/२०१८ को समाप्त होगा। फिर मंगल की अंतर्दशा ०८/०३/२०१९ को समाप्त

होगी।

यह समय आपके लिए अनुकूलता नहीं रहेगा इस समय आपको सर्वत्र परेशानी समस्याओं का सामना करना पड़ेगा। तथा उन्नति मार्ग भी अवरुद्ध रहेंगे। व्यापार के लिए समय प्रतिकूल रहेगा। एवं लाभमार्ग अवरुद्ध रहेंगे। आर्थिक दृष्टि से स्थिति अच्छी नहीं रहेगी जिससे समय समय पर आपको आर्थिक परेशानी का सामना करना पड़ेगा। नौकरी में पदोन्नति सम्बधी व्यवधान आएंगे तथा अधिकारी वर्ग से सम्बंधों में तनाव रहेगा। पारिवारिक सुख शान्ति तथा समृद्धि में भी न्यूनता आएगी एक दूसरे के प्रति असहयोग का भाव बना रहेगा। इसके अतिरिक्त प्रभावशाली लोगों से सम्पर्क स्थापित होंगे तथा उनसे भविष्य में वांछित लाभ तथा सहयोग प्राप्त होगा अतः संयमपूर्वक समय व्यतीत करें।

यह समय आपके लिए मिश्रित फलदायक रहेगा तथा शुभ फलों के साथ साथ अशुभ फलों की भी प्राप्ति होगी इस समय शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्य एवं योजनाओं में परिश्रम से भी सफलता अल्प मात्रा में ही प्राप्त होगी तथा अन्यत्र भी उन्नति मार्ग अवरुद्ध रहेंगे। इस समय आपके वरिष्ठ एवं उच्चाधिकारियों से तनाव पूर्ण संबध रहेंगे। पारिवारिक सुख शांति तथा समृद्धि मध्यम रहेगी तथा किसी एक सदस्य का स्वास्थ्य इस समय प्रभावित हो सकता है इस समय ज्योतिष आध्यात्म या परविद्या के प्रति आपकी रुचि उत्पन्न हो सकती है तथा इस क्षेत्र में कुछ उल्लेखनीय अनुभव या उपलब्धियां भी अर्जित कर सकते है यद्यपि आपके शत्रु कुछ परेशानियां उत्पन्न करने की कोशिश करेंगे लेकिन उसमें वे सफल नहीं होंगे इसके अतिरिक्त आपको अपने स्वास्थ्य का पूर्ण ध्यान रखना चाहिए।

यह समय आपके लिए अच्छा नहीं रहेगा। इस समय अपने लक्ष्यों को प्राप्त करने में आपको कई प्रकार से व्यवधान तथा विलम्ब का सामना करना पड़ेगा व्यापार में भी इस समय हानि की संभावना हो सकती है यदि नौकरी में है तो पदोन्नति संबधी विलम्ब होगा तथा अधिकारी वर्ग से संबधो में कटुता रहेगी। आर्थिक स्थिति में मध्यम रहेगी तथा यदा कदा लाभ मार्ग अवरुद्ध होने से आपको आर्थिक परेशानी का सामना करना पड़ सकता है पारिवारिक सुख शांति तथा समृद्धि भी अच्छी नहीं रहेगी तथा सदस्यों के परस्पर मन मुटाव तथा मतभेद रहेंगे। शत्रु एवं प्रतिद्वन्दियों से भी इस समय परेशानी का सामना करना पड़ेगा अतः इनसे आपको सावधान रहना चाहिए सांसारिक व्यय में इस समय अधिकता रहेगी इस लिए व्यापार भी नियंत्रण रखें इसके अतिरिक्त अनिच्छित तथा व्यर्थ की यात्राएं भी सम्पन्न होगी अतः धैर्य एवं संयम पूर्वक समय व्यतीत करें।

फलादेश - 2019

गोचरवश इस वर्ष बृहस्पति चतुर्थ भाव में भ्रमण करेगा। अतः यह वर्ष आपके लिए सामान्यतया अच्छा रहेगा। शारीरिक रूप से इस समय आप स्वस्थ तथा प्रसन्न रहेंगे तथा पारिवारिक सुख शान्ति तथा समृद्धि में भी वृद्धि होगी। एवं सभी लोग परस्पर मिलजुल कर रहेंगे। इस समय आपकी योजनाएं भी पूर्ण होंगी। व्यापारिक तथा कार्यक्षेत्र में उन्नति एवं सफलता के लिए यह वर्ष शुभ एवं अनुकूल रहेगा। आर्थिक दृष्टि से भी वर्ष मध्यम रहेगा तथा आवश्यक मात्रा में धन एवं लाभ अर्जित करने में आप समर्थ रहेंगे। सम्पर्क के लोगो से इस समय आपको प्रसंशा मिलेगी तथा उनके मध्य आपकी मान प्रतिष्ठा की वृद्धि होगी। इस वर्ष में जायदाद या आवास सम्बन्धी सुख एवं लाभ की भी प्राप्ति के योग बनेंगे। साथ ही माता एवं ससुराल पक्ष से सहयोग तथा लाभ भी प्राप्त हो सकता है। लेकिन गोचरफल इस समय अशुभ फल प्रदान करेंगे परन्तु दशा शुभ फलदायक रहेगी। अतः उपर्युक्त फलों में यदा कदा विलम्ब या न्यूनता रहेगी परन्तु परिश्रमपूर्वक सफलता मिल सकेगी।

गोचर वश शनि का भ्रमण इस वर्ष में पंचम भाव में रहेगा। अतः इसके प्रभाव से आपका शारीरिक एवं मानसिक स्वास्थ्य मध्यम रहेगा तथा मानसिकता में भी परिवर्तन होगा। साथ ही आप अपने सांसारिक महत्व के कार्यों को परिश्रम एवं उत्साह से सम्पन्न करने में तत्पर रहेंगे तथा इनमें न्यूनाधिक सफलता भी मिलती रहेगी। समाज में अन्य जनों से आपके संबंध सामान्य रहेंगे तथा उनसे आदर भी प्राप्त होगा। आर्थिक स्थिति इस समय अच्छी रहेगी तथा आवश्यक मात्रा में धनार्जन होगा। साथ ही परिश्रम पूर्वक आपके आय स्रोतों में भी वृद्धि होगी। संतति पक्ष से सुख सहयोग मध्यम रहेगा तथा अपने कार्य क्षेत्र में वे परिश्रम पूर्वक उन्नति एवं सफलता अर्जित कर सकेंगे। साथ ही दाम्पत्य सुख भी मध्यम रहेगा तथा यदा कदा पत्नी का स्वास्थ्य प्रभावित हो सकता है।

इस समय अन्य गोचर फल शुभ रहेंगे परन्तु दशा फल विशेष अनुकूल नहीं रहेगी फलतः सांसारिक महत्व के कार्यों में यदा कदा व्यवधान एवं समस्याएं उत्पन्न होगी लेकिन परिश्रम एवं पराक्रम से आप इनका समाधान करने में समर्थ रहेंगे। इस वर्ष राजनैतिक लोगों से भी आपके सम्पर्क स्थापित होंगे परन्तु उनसे विशेष लाभ एवं सहयोग अल्प मात्रा में ही प्राप्त होगा। अतः परिश्रम पूर्वक कार्यों को सम्पन्न करने में तत्पर रहें।

गोचरवश इस वर्ष में राहु की स्थिति एकादश भाव तथा केतु की स्थिति पंचम भाव में रहेगी। इनके प्रभाव से यह वर्ष आपके लिए शुभ फल प्रदान करेगा। यदा कदा अशुभ फलों की भी प्राप्ति होगी। व्यापारिक तथा कार्यक्षेत्र में इस समय आप परिश्रम से सफलता प्राप्त करेंगे। लाभ मार्ग भी प्रशस्त होंगे। नौकरी या राजनीति में इस समय आपको किसी पद की प्राप्ति होगी जिससे समाज में आपकी मान प्रतिष्ठा बढेगी तथा सभी लोग आपके प्रभाव को स्वीकार करेंगे। आर्थिक दृष्टि से भी यह वर्ष आपके लिए शुभ ही रहेगा एवं आय स्रोतों में भी वृद्धि होगी जिससे आवश्यक मात्रा में धन एवं लाभ अर्जित करने में सफल रहेंगे। लेकिन इस समय आप यदा कदा क्रोधाधिक्य का प्रदर्शन करेंगे। तथा सन्तति पक्ष से अप्रसन्न तथा असंतुष्ट रहेंगे। इस समय उनका स्वास्थ्य भी प्रभावित हो सकता है। साथ ही गोचरफल प्रतिकूल रहेंगे तथा दशा फल शुभ फल प्रदान करेगी। अतः आप इस वर्ष शुभ फल ही अधिक मात्रा में प्राप्त करेंगे।

मंगल की महादशा में मंगल का अंतर ०८/०३/२०१६ को समाप्त होगा। उसके

बाद राहु का अंतर प्रारंभ होगा। मंगल द्वादश भाव में मेष राशि में स्थित हैं जबकि राहु तृतीय भाव में कर्क राशि में स्थित हैं।

यह समय आपके लिए अच्छा नहीं रहेगा। इस समय अपने लक्ष्यों को प्राप्त करने में आपको कई प्रकार से व्यवधान तथा विलम्ब का सामना करना पड़ेगा व्यापार में भी इस समय हानि की संभावना हो सकती है यदि नौकरी में है तो पदोन्नति संबधी विलम्ब होगा तथा अधिकारी वर्ग से संबधो में कटुता रहेगी। आर्थिक स्थिति में मध्यम रहेगी तथा यदा कदा लाभ मार्ग अवरुद्ध होने से आपको आर्थिक परेशानी का सामना करना पड़ सकता है पारिवारिक सुख शांति तथा समृद्धि भी अच्छी नहीं रहेगी तथा सदस्यों के परस्पर मन मुटाव तथा मतभेद रहेंगे। शत्रु एवं प्रतिद्वन्दियों से भी इस समय परेशानी का सामना करना पड़ेगा अतः इनसे आपको सावधान रहना चाहिए सांसारिक व्यय में इस समय अधिकता रहेगी इस लिए व्यापार भी नियंत्रण रखें इसके अतिरिक्त अनिच्छित तथा व्यर्थ की यात्राएं भी सम्पन्न होगी अतः धैर्य एवं संयम पूर्वक समय व्यतीत करें।

यह समय आपके लिए विशेष अच्छा नहीं रहेगा इस समय आपमें साहस तथा आत्मविश्वास की कमी रहेगी जिससे शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्य अल्प मात्रा में सम्पन्न होंगे आर्थिक दृष्टि से स्थिति में अस्थिरता रहेगी तथा आयस्रोतो में कमी के कारण आपको आर्थिक परेशानी का भी सामना करना पड़ सकता है। व्यापार के लिए समय अच्छा नहीं रहेगा तथा इस समय आपको अनावश्यक समस्याओं का सामना करना पड़ेगा। तथा लाभ मार्ग भी अवरुद्ध रहेंगे नौकरी में पदोन्नति सम्बंधी व्यवधान उत्पन्न होंगे तथा अधिकारी वर्ग से सम्बंधों में कटुता रहेगी जिससे वे आपसे अप्रसन्न रहेंगे साथ ही अनिच्छित तथा व्यर्थ की यात्राएं भी सम्पन्न होंगी जिससे मानसिक परेशानी होगी लेकिन शत्रु से आपको कोई समस्या नहीं होगी तथा उनको प्रभावित करने में आप समर्थ रहेंगे।